—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2006 वर्ष 5 अंक 02

महब्बते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

तुम में से कोई उस वक़्त तक कामिल मोमिन नहीं हो सकता जब तक वह अपने बाप, बेटे, सारे लोग बल्कि अपनी जान से भी ज़ियादा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत न रखे।(हदीस : मुसन्नफ़ अब्दुरज़्ज़ाक़)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

❐	तज़किरा महबूबे दो आलम का	सम्पादकीय..... 3
❐	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
❐	प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम 6
❐	निकले हमारी जान मुहम्मद के शहर में	राज़ आजमी 7
❐	दीने इस्लाम का मिजाज	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 8
❐	सीरतुन्नबी	अल्लामा शिब्ली नोमानी..... 9
❐	संक्षिप्त इस्लामी इतिहास	मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी..... 13
❐	ताकत का नशा खतरनाक है	मौलाना मुहम्मद राबिअ़ हसनी..... 15
❐	मंजूम दुआ	हैदर अली नदवी 21
❐	अतुकान्त नअ़त शरीफ	मरयम कादिरी 22
❐	दीनी गैरत	डा० अब्दुल्लतीफ 23
❐	तेरी रहमतों के साये में	काविश रूदौलवी 23
❐	महब्बते रसूल (सल्ल०)	हैदर अली नदवी 24
❐	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा 26
❐	मौलवी मुहम्मद इस्हाक हुसैनी	डा० एच रशीद 27
❐	मुसलमान हर क्षेत्र में	हबीबुल्लाह आजमी 28
❐	पश्चिम का दोहरा मापदण्ड	सम्पादक 29
❐	देश को घुन की तरह	अली मियां 30
❐	डिन्मार्क का बाईकाट	अल अहरार 30
❐	कमलादास से कमला सुरैया तक	मु० रियाज 31
❐	हाली के अशआर	 34
❐	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ० मुईद अशरफ नदवी 40

❐❐❐

(सम्पादक का लेखकों से सहमत होना आवश्यक नहीं है)

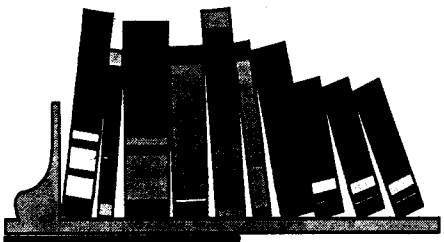

तज़किरा महबूबे दो आलम का
(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों पर जितना करम फ़रमाते हैं, जितना रह्म करते हैं उतना कोई दूसरा नहीं कर सकता, अल्लाह ने अपनी किताब में ख़ुद एअ़लान फ़रमा दिया कि "मेरी रह़मत हर चीज़ को घेरे हुए है। (७:१५६)

यह भी एअ़लान फ़रमाया कि "मुझे पुकारो मैं जवाब दूंगा। (४०:६०) यानी मुझ से मांगो मैं अ़ता करूंगा। और अपने मह़बूब नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से कहला दिया कि जो अल्लाह से नहीं मांगता अल्लाह उस पर ग़ुस्सा होते हैं। (ह़दीस) और अल्लाह ने अपने करम से इस शक शुबहे को भी दूर फ़रमा दिया कि हर बन्दे की पुकार या आहिस्ता की आवाज़ मुझ तक पहुंचेगी या नहीं चुनांचि साफ़ एअ़लान फ़रमा दिया कि "मैं क़रीब हूं।(२:१८६) और बड़ी शफ़कत से फरमाया : हम तो तुम्हारी गर्दन की मोटी रग से भी क़रीब हैं। (५०:१६)

उसी करम वाले मालिक ने अपने अहकाम (आदेश) और पैग़ाम (सन्देश) अपने बन्दों तक पहुंचाने के लिए नबी और रसूल भेजे हमारे जद्दे अमजद (पहले पुर्खा) आदम अ़लैहिस्सलाम पहले इन्सान भी हैं और पहले नबी भी। ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश उस तरह़ नहीं हुई जिस तरह़ किसी इन्सान की पैदाइश अपनी मां की कोख से होती है। अल्लाह तआ़ला ने मिट्टी से एक पुत्ला तैयार करके उसमें रूह़ डाल दी, फिर उनके जिस्म को ख़ूब ख़ूबसूरत कर दिया फिर अपनी क़ुदरत से उनकी पस्ली से एक औरत निकाल दी और ह़ज़रत आदम (अ़०) से उनको बियाह दिया। दोनों दादा, दादी जन्नत में रहते थे दोनों में बड़ी मह़ब्बत थी, दोनों को बढ़िया जन्नती कपड़े मिले हुए थे। जब अल्लाह को मंज़ूर हुआ कि वह दुन्या में आएं तो उसके अस्बाब पैदा हुए और दादा दादी दुन्या में उतारे गये, पहले बहुत दूर दूर रहे फिर अल्लाह की मर्ज़ी से मुलाक़ात हुई और जब अल्लाह को मंजूर हुआ दोनों से औलाद का सिलसिला शुरूअ़ हुआ और ख़ूब औलाद हुई।

जब अल्लाह तआ़ला ने फ़िरिश्तों के बीच आदम अ़लैहिस्सलाम में रूह़ (प्राण) डाली थी तो उनकी बड़ाई ज़ाहिर करने के लिए सब को सजदा करने का ह़ुक्म दिया था, ह़ुक्म पाते ही सब सजदेमें गिर गये लेकिन उन फ़िरिश्तों के बीच एक जिन्नी था। उसका नाम था अ़ज़ाज़ील, उसको घमण्ड आया उसने सजदा न किया तो अल्लाह तआ़ला ने उसको वहां से निकाल दिया अब वह मलऊ़न हो गया, जन्नत से दूर कर दिया गया। उसने दादा आदम से ह़सद (ईर्ष्या) किया। अल्लाह तआ़ला से आदम की औलाद (सन्तान) को बहकाने की,ता क़ियामत छूट मांगी, अल्लाह की मसलह़त, उसको अपने बन्दों को परखना था छूट दे दी, अ़ज़ाज़ील (जिस को इब्लीस भी कहते हैं और शैतान भी) ने क़सम खाई कि मैं आदम की औलादा को बहका कर रहूंगा, उधर अल्लाह तआ़ला ने भी एअ़लान फ़रमा दिया कि "मेरे ख़ास बन्दों पर तेरा क़ाबू नहीं चल सकेगा सिवा उसके जो गुमराहों में से तेरे पीछे चलने लगे।" (४५:४२)

लेकिन शैतान और उसके चेले चापड़ आदम की औलाद को बहकाने में लगे हुए हैं और क़ियामत तक वह अपनी कोशिश में लगो रहेंगे और बहुतों को वह बहका कर जहन्नम की राह पर लगा देंगे लेकिन अल्लाह पर ईमान रखने वालों और उस पर भरोसा रखने वालों पर उस का

काबू न चल सकेगा। (१६:६६)

अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों को सीधी राह दिखाने के लिए जो नबियों और रसूलों का सिलसिला चलाया तो हर ज़माने (काल) और हर इलाक़े में अपने नबी व रसूल भेजता रहा, जिन की सहीह गिन्ती अल्लाह ही को मअ़लूम है। उनमें कुछ बड़े मरतबे (पद) वाले हैं जैसे हज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम, हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अ़लैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम और सबसे आख़िर में सब से ज़ियादा मरतबे वाले, सभी नबियों और रसूलों के सरदार अपने महबूब और आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को तमाम आ़लम के लिए और क़ियामत तक के लिए रसूल बना कर भेजा। वह ख़ालिक़ के भी महबूब हैं और मख़्लूक के भी महबूब हैं। महबूबे दो आ़लम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) हैं।

दादा आदम (अ़०) को अल्लाह ने बिन मां बाप के पैदा फ़रमाया, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम को बिन बाप के पैदा फ़रमाया और सभी नबियों और रसूलों को मां बाप से पैदा फ़रमाया, आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी अल्लाह तआ़ला ने मां बाप के ज़रीअ़े पैदा फ़रमाया। आपके वालिद साहिब का नाम अ़ब्दुल्लाह और मां का नाम आमिना था, मशहूर क़ौल के मुताबिक़ (अनुसार) आप की पैदाइश १२ रबीउ़ल अव्वल दोशंबा (सोमवार) के दिन सुब्ह के वक़्त हुई। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

पैदाइश से पहले ही वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया था, इस लिये आप यतीम थे। चूंकि आप को सारे आ़लम का उस्ताद और रहनुमा बनना था इस लिये अल्लाह की मसलहत यही हुई कि आप का उस्ताद सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला हो। इस तरह आप ने किसीसे लिखना पढ़ना नहीं सीखा और आप का लक़ब (उपाधि) उम्मी हुआ यानी वह जिसने किसी मख़्लूक़ से लिखना पढ़ना न सीखा हो। चालीस साल की उ़म्र से वही आने का सिलसिला शुरूअ़ हुआ जो २३ साल तक जारी रहा। वही उतरने के साथ साथ 'तब्लीग़े रिसालत' यअ़नी बन्दों तक अल्लाह का पैग़ाम पहुंचाने का काम भी जारी रहा, यहां तक कि आयत उतरी : (अनुवाद)

"आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन पूरा कर दिया और अपनी निअ़मत (पुरस्कार) तुम पर पूरी कर दी और इस्लाम को तुम्हारे लिये दीन के तौर पर पसन्द कर लिया। (५:३) क़ुर्आन मजीद दीने इस्लाम बताने ही के लिए उतर रहा था। क़ुर्आन मजीदा पूरा हुआ दीन पूरा हो गया। सह़ाब–ए–किराम (रज़ि०) ने एक तरफ़ क़ुर्आने मजीद को सीनों में और किताब में महफ़ूज़ कर लिया तो दूसरी जानिब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की सारी बातें और सारे अ़माल महफ़ूज़ कर लिये जो बअ़द में अह़ादीस की किताबों की शक्ल में लिख लिये गये।

इसी क़ुर्आने मजीद से मअ़लूम हुआ कि हमारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के लिए हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने इस तरह दुआ की थी : "ऐ हमारे रब इन ही में से (यअ़नी हमारी औलादा में से) एक रसूल भेजिए जो इन पर तेरी आयतें पढ़े और इनको किताब व हिक्मत सिखाए और इन को पाक करे, बेशक आप ज़बरदस्त हिकमत वाले हैं। (२:१२६) दुआ क़बूल हुई महबूबे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पैदा फ़रमा कर और नबी बनाकर एअ़लान फ़रमा दिया : "अल्लाह ने ईमान वालों पर इह़सान किया कि उनमें, उन ही में से एक रसूल भेजा जो उन पर अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और उनको पाक करते हैं और उनको किताब व हिकमत सिखाते हैं। (३:१६४) और फ़रमाया : तुम्हारे पास तुम ही में से ऐसा रसूल आया जिसको तुम्हारी तकलीफ़ से तकलीफ़ होती है, वह तुम्हारी भलाई के ख़्वाहिशमन्द (इच्छुक) रहते हैं और ईमान वालों पर बड़े ही शफ़ीक़ और मिहरबान रहते हैं। (६:१२८) सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम।

अल्लाह तआ़ला ने महबूबे दो आ़लम को हुक्म दिया कि : "आप कह दीजिए कि अगर तुम

(शेष पृष्ठ १६ पर)

क़ुरआन की शिक्षा

मौ० मुहम्मद उवैस नदवी

तौबा व इस्तिग़फ़ार :

ऐ कौम अपने रब से मुआफी मांगो फिर उसकी तरफ लौटो (हूद : ५२)

जब आदमी का कपड़ा मैला हो जाता है तो उसको साबुन से धो देते हैं। इसी तरह गुनाह करने से आदमी का दिल गन्दा हो जाता है। उस गन्दगी को तौबा के जरीअे दूर किया जा सकता है।

तौबा का मतलब यह है कि हम खुदा के सामने अपनी खता का इकरार करें, उस पर शरमिन्दगी जाहिर करें और आइन्दा जान बूझ कर ऐसी गलती न करने का वअ़दा करें, अगर किसी का हक बाकी है तो उस को पूरा करें। जैसे हम ने किसी पर बुहतान बान्धा है या हमारे पास किसी का माल नाजाइज तौर पर है तो यह माल वापस करें और जिस पर बुहतान बान्धा है उससे अपना कुसूर मुआफ कराएं इन चीजों के बिना तौबा पूरी न होगी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम। रसूल होने के बावजूद दिन में सत्तर–सत्तर बार तौबा करते थे।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि एक मर्तबा शैतान ने अल्लाह तआला से कहा कि खुदावन्दा। जब तक तेरे बन्दों के दम में दम है उन को बहकाता रहूंगा। अल्लाह तआला ने फरमाया जब तक मेरे बन्दे मुझ से मुआफी मांगते रहेंगे मैं उनको बख्शता रहूंगा। हमको अपने खुदा से बराबर मुआफी मांगते रहना चाहिए और मुआफी के कबूल होने की उम्मीद रखना चाहिए।

दुआ

लोगो अपने रब से गिड़गिड़ा कर चुपके चुपके पुकारो और ऐसी आवाज से जो कि पुकार कर बोलने से कम हो। (अअ़राफ : २०५)

जो मांगना हो अल्लाह से मांगो उसके सिवा किसी में ताकत नहीं कि तुम्हारी किसी आरजू को पूरा कर सके, जमीन व आसमान की हर चीज अल्लाह ही की मुहताज है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह यह पसन्द है कि उससे उसकी निअ़मतें मांगी जाएं। जो नहीं मांगता उससे वह नाखुश होता है। आदमी को बड़ी और छोटी हर चीज के लिए अल्लाह ही के सामने हाथ फैलाना चाहिए। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया कि सब से अच्छी आदत दुआ है। अपने लिये, मां बाप के लिए, बीवी बच्चों के लिए, बुजुर्गों के लिए, और हर मुसलमान के लिए दुआ करना चाहिए।

हराम चीजों के लिए और अपनी या औलाद और माल की तबाही के लिए दुआ न करना चाहिए। सिर्फ दुन्या की भलाई की दुआ न करना चाहिए बल्कि दुन्या व आखिरत दोनों की काम्याबी और खुशी की दुआ करना चाहिए। जो कुछ मांगा जाए सच्चे दिल से, और इसका यकीन रखते हुए कि हमारी दुआ कबूल होगी। चुपके चुपके गिड़गिड़ा कर मांगना चाहिए। अल्लाह तआला गाफिल दिल की दुआएं नहीं कबूल करता है।

दुआ के मक्बूल होने के खास औकात यह है-

फर्ज नमाजों के बाद।

पानी बहुत जोर से बरस रहा हो।

रात के आखिर हिस्से में।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि इज्जत व जलाल वाले खुदा के आगे जब कोई बन्दा अपने दोनों हाथ फैला कर कुछ भलाई मांगता है तो वह उसको ना मुराद लौटाते हुए शरमाता है।

इन्शा अल्लाह :

और किसी काम में न कहना कि कल करूंगा, मगर यह कि खुदा चाहे। (कहफ:२३,२४) खुदा के हुक्म के बिना किसी दरख्त का कोई पत्ता नहीं हिल सकता, इन्सान की क्या ताकत कि उसकी मदद के बिना कोई काम कर सके, इस लिए कुर्आन कहता है कि अगर तुम्हें कोई काम करना हो तो यूं न कह दिया करो कि मैं ऐसा कर दूंगा, बल्कि यूं कहा करो कि अगर खुदा ने चाहा तो मैं ऐसा कर दूंगा या इन्शा अल्लाह मैं ऐसा कर दूंगा।

डिन्मार्की गुस्ताख सुन !
मुआफ़ी मांग ले वरना बहुत बुरा होगा
चढ़ा हत्थे अ़दालत के तो सर जुदा होगा
निगाहे इन्स से बचना तो कुछ मुम्किन है
मलक आएगा जो रब का तो क्या होगा।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अमतुल्लाह तस्नीम

यक़ीन और सब्र की एक मिसाल

हजरत अनस (र०) से रिवायत है कि मेरे चचा अनस (र०) बिन नुजिर बद्र की जंग में शरीक नहीं हुए। कहते हैं कि मैंने अर्ज की, या रसूलल्लाह! मैं पहली लड़ाई में, जब आप मुश्रिकों से लड़े थे, गैरहाजिर रहा। अगर अल्लाह मुझे किसी जंग में मुश्रिकों से लड़ने का मौका देगा तो अल्लाह देखेगा कि मैं क्या करूंगा। जब उहद का दिन आया और मुसलमान छंट गये तो कहा, ऐ अल्लाह ! मैं तेरी तरफ इसका अुज़्र पेश करता हूं जो उन्होंने (या साथियों ने) किया और मैं उनसे बरी होता हूं जो उन्होंने किया (मुश्रिकों ने) फिर आगे बढ़े तो सअद बिन मजाज सामने आये। कहा, ऐ सअद बिन मआज। जन्नत ! कसम रब्बे काबा की, मुझे उसकी खुशबू उहद के उस तरफ से आ रही है। सअद ने कहा, या रसूलल्लाह! यह उन्हीं काम था, मेरे बस की बात न थी। अनस (र०) कहते हैं कि हमने कुछ ऊपर अस्सी (८०) निशान उनके बदन पर पाये, तलवारों के या नेजों के या तीरों के और हमने उनको इस हाल में पाया कि वह शहीद हो चुके थे। और मुश्रिकों ने उनके टुकड़े–टुकड़े कर दिये थे। हत्ता कि कोई उनको पहचान न सका। उनकी बहिन ने उंगली के पोरों के निशान से पहचाना। अनस (र०) कहते हैं कि हमारा गुमान था कि यह आयत "मिनल् मुअ्मिनीन रिजालुन सदकू मा आहदुल्लाह अलैहि" (मोमिनीन में से कुछ ऐसे जवान मर्द हैं कि उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया उसको सच कर दिखाया) इन्हीं के बारे में उतरी। (बुखारी मुस्लिम)

थोड़ा और बहुत सदक:

हजरत अबू मस्ऊद अुकबः बिन अम्रू अल अन्सारी अलबदरी से रिवायत है कि जब सदकः की आयत उतरी हम उस वक्त पीठ पर बोझ उठाकर मजदूरी करते थे। एक आदमी आये और उन्होंने बहुत कुछ सदकः किया। लोगों ने कहा, रियाकार है। दूसरा आदमी आया, उसने एक साअ सदकः किया। लोगों ने कहा, अल्लाह को उसके एक साअ की जरूरत न थी। तो यह आयत उतरी।

अल्लजीन यल्मिजूनल्मुत्तव्विअीन मिनल्मुअ्मिनीन फिस्सदकाति वल्लजीन ला यजिदून इल्ला जुहदहुम।

वह लोग जो उन मुअमिनों पर तन्ज करते हैं जो खुशी से सदकः करते हैं। और उन लोगों पर जो बदिक्कत तमाम (सदकः करने के लिए) कुछ पाते हैं। (पार : १० सू० तौबः ६ रु०१० आ० ७१)

अल्लाह की अज़मत और बेनियाज़ी

हजरत अबूज़र जुन्दुब (र०) जुनादह से रिवायत है। वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं और आप रब तबारक व तआला से रिवायत फरमाते हैं–फरमाया, ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब गुमराह हो, सिवा उसके जिसको मैं हिदायत दूं पस मुझसे हिदायत चाहो, मैं तुमको हिदायत दूंगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम सब भूके हो मगर जिसको मैं खिलाऊं, मुझसे मांगो, मैं तुमको खिलाऊंगा। ऐ मेरे बन्दो ! तुम सब नंगे हो, मगर जिसको मैं पहनाऊं, सो मुझसे कपड़े मांगो, मैं तुमको कपड़ा दूंगा। ऐ मेरे बन्दो। तुम सब रात–दिन खताएं करते हो और मैं तमाम गुनाहों को बख्श देता हूं; सो मुझसे बख्शिश चाहो मैं तुम्हें बख्श दूंगा। ऐ मेरे बन्दो! अगर तुम मुझे नुकसान पहुंचाना चाहो तो मुझको नुक्सान नहीं पहुंचा सकते और अगर तुम मुझको नफा पहुंचाना चाहो तो नफा नहीं पहुंचा सकते। ऐ मेरे बन्दो। तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन्न–सब के सब निहायत मुत्तकी और परहेजगार हो जायें तो मेरे मुल्क में इससे कोई जियादती (बढ़ती) न होगी। ऐ मेरे बन्दो। तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन्न–सब के सब निहायत ही बदकार हो जायें तो इससे मेरे मुल्क में कुछ नुकसान न होगा। ऐ मेरे बन्दो! तुम्हारे अगले और पिछले इन्सान और जिन्न सब एक चटियल मैदान में जमा हों और मुझसे सुवाल करें तो मैं सबको दूंगा और मुझे कुछ नुक्सान न होगा, मगर इतना जैसे सुई (को पानी में डालने) से समन्दर में कमी नहीं होती। ऐ मेरे बन्दो ! बेशक यह तुम्हारे आमाल हैं, मैं इनको गिनता हूं, फिर वही तुमको

पूरा–पूरा मिलेगा। सो जो भलाई पाये वह अल्लाह की हम्द करे और जो उसके सिवा पाये, वह अपने नफस ही को मलामत करे। (मुस्लिम)

वफात के करीब जियादः तस्बीह और इस्तिग़्फार

हजरत अबू हुरैरः से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने ऐसे आदमी पर हुज्जत पूरी कर दी जिसकी उम्र को मुअख्खर किया यहां तक कि साठ साल को पहुंच गया। (बुखारी)

हजरत इब्नि अब्बास (र०) से रिवायत है कि हजरत उमर (र०) मुझे बद्र के बूढ़ों के साथ शरीक करते थे। बाजों के दिल में शिकायत पैदा हुई कि यह हमारे साथ क्यों शरीक किये जाते हैं। इन के बराबर तो हमारे बेटे हैं। हजरत उमर (र०) ने कहा इसकी वजह तुम समझ लोगे। इब्नि अब्बास (र०) कहते हैं कि एक दिन मुझे बुलाया और उनके साथ मुझे शरीक किया। मुझे ख्याल भी नहीं गुजरा कि आज मुझे आजमाइश के लिए बुलाया है। फिर हजरत उमर(र०) ने फरमाया, अल्लाह तआला के इस कौल के बारे में क्या कहते हो–इजा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु। बाजों ने कहा कि अल्लाह तआला ने हमको हुक्म दिया है कि जब हमको फतिह हो और हमारी मदद की जाये तो हम उस की तारीफ करें और उससे बख्शिश चाहें और बाज खामोश रहे। हजरत उमर (र०) ने कहा, ऐ इब्नि अब्बास (र०)! तुम्हारा भी यही ख्याला है? मैंने कहा, नहीं। कहा, फिर क्या कहते हो? मैंने कहा, यह आं हजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफात के बारे में है। आपको इसकी इत्तिला दी है। फरमाया, इजा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु (जब अल्लाह की मदद आये और उसकी फतिह) – यह अलामत आपकी वफात की है। फसब्बिह बिहम्दि रब्बिक वस्तग्फिरह इन्नहू कान तव्वाबा। (तो अपने रब की हम्द के साथ पाकी बयान करो और उससे बख्शिश चाहो बेशक वह तौबा कुबूल करने वाला है) – हजरत उमर (र०) ने कहा, मैं अभी इतना ही जानता हूं, इससे जियादः नहीं जानता। (बुखारी)

हजरत आयशः (र०) से रिवायत है कि इजा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु उतरने के बाद आपने कोई नमाज ऐसी नहीं पढ़ी जिसमें आप यह न कहते हों–'सुबहानक रब्बना व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग्फिर्ली– (ऐ हमारे परवर दिगार ! तू पाक है, हम तेरी तारीफ करते हैं, ऐ अल्लाह ! मुझको बख्श दे)। (बुखारी–मुस्लिम)

और ऐंक सहीह रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर रूकूअ व सुजूद में कहते थे– सुबहानक अल्लाहुम्म व बिहम्दिक अल्लाहुम्मग़्फिर्ली। गोया कुर्आन के हुक्म–फसब्बिह् बिहम्दि रब्बिक वस्तग़्फिरहु–पर अमल करते थे।

और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम वफात से पहले अक्सर कहते थे – सुबहानक व बिहम्दि रब्बिक वअस्तग़्फिरूक। हजरत आयश (र०) ने अर्ज किया या रसूलल्लाह। यह कौन से कलिमात हैं। मैं देखती हूं कि अभी कुछ दिनों से आप कहने लगे हैं। फरमाया, मेरी उम्मत में एक अलामत बनाई गई है कि जब में उसको देखूं तो यह कहूं–इजा जाअ नस्रुल्लाहि वल्फत्हु.....।

और एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर कहते थे–सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग्फिरुल्लाह व अतूबु अिलैहि। मैंने कहा या रसूलल्लाह! मैं देखती हूं कि अक्सर आप कहते हैं – सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग्फिरुल्लाह व अतूबु अिलैहि। आपने फरमाया मुझको मेरे परवरदिगार ने खबर दी है अन्करीब मैं अपनी उम्मत में एक अलामत देखूंगा। जब मैं उसको देखूं तो सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि अस्तग्फिरुल्लाह व अतूबु अिलैहि की जियादती करूं। सो मैंने वह अलामत देख ली। अल्लाह तआला फरमाता है, जब अल्लाह की मदद आ जाए और फत्ह यानी फत्हे–मक्का, तो अपने रब की हम्द के साथ पाकी बयान करो और उससे बख्शिश चाहो। बेशक वह बड़ा तौबः कुबूल करने वाला है।

नअ़ते पाक

राज़ आज़मी

निकले हमारी जान मुहम्मद के शहर में।
दो ग़ज़ का हो मकान मुहम्मद के शहर में।।
ईमां की रौशनी है फ़िरिश्तों का है हुजूम।
है कितनी आन बान मुहम्मद के शहर में।।
गेसु–ए–मुस्तफ़ा से मुअत्तर है हर गली।
ख़ुशबू की है उड़ान मुहम्मद के शहर में।।
रहमत की सरज़मीं का तसद्दुक़ तो देखिये।
ज़र्रे हैं आसमान मुहम्मद के शहर में।।
सब कुछ लुटा के जाते हैं बाज़ार ख़ुल्द में।
ईमां की है दुकान मुहम्मद के शहर में।।
एअ़जाज़ ही तो है यह रसूले करीम का।
पत्थर को है ज़बान मुहम्मद के शहर में।।
दोनों जहां की निअ़मतें मुझ को मिलेंगी राज़।
मेरा भी हो मकान मुहम्मद के शहर में ।।

दीने इस्लाम का मिजाज

और उसकी खास-खास बातें

मौ० स० अबुल हसन अली हसनी

बिदअत और उससे होने वाले नुकसानात

किसी ऐसी चीज को जिस को अल्लाह तआला व रसूल ने दीन में शामिल नहीं किया उसका हुक्म नहीं दिया, दीन में शामिल कर लेना उसका एक जुज बना देना, उसको सवाब और अल्लाह का कुर्ब हासिल करने के लिए करना, और उसकी खुद की बनाई हुई शरायत व आदाब की उसी पाबन्दी के साथ करना जिस तरह एक हुक्म शरई की पाबन्दी की जाती है, बिदअत है। बिदअत दरहकीकत दीने इलाही के अन्दर शरीअते इंसानी की तशकील और "रियासत के अन्दर रियासत" है। इस "शरीअत" बिदअत के अलग कानून हैं जो कभी–कभी शरीअते इलाही के बराबर और कभी कभी उससे बढ़ जाते हैं। बिदअत इस हकीकत को नजरअन्दाज करती है कि शरीअत मुकम्मल हो चुकी। जिसको फर्ज व वाजिब बनना था वह फर्ज व वाजिब बन चुका। दीन की टक्साल बन्द कर दी गयी, अब जो नया सिक्का यहां का निकला हुआ बताया जायेगा वह जाली होगा। इमाम मालिक फरमाते हैं :–

तर्जुमा : "जिसने इस्लाम में कोई बिदअत पैदा कर दी, और उसको वह अच्छा समझता है, वह इस बात का एलान करता है कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पैगाम पहुंचाने में खयानत की, इस लिए कि अल्लाह तआला फरमाता है कि "मैं ने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया" जो बात अहदे रिसालत में दीन नहीं थी, वह आज भी दीन नहीं हो सकती।"

शरीअत की खुसूसियत यह है कि वह अल्लाह की तरफ से नाजिल हुई है। उसकी सहूलत और उसका हर एक के लिए हर जमाने में काबिले अमल होना इसकी खुसूसियत है। क्योंकि जो दीन का शारिअ है वह इन्सान का खालिक भी है। वह इन्सान की जरूरतों उसकी फितरत और उसकी ताकत व कमजोरी से वाकिफ हैं।

तर्जुमा : "(और भला) क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया और वह बारीक बीन (और) पूरा बाखबर है।" (सुर : अल्मुल्क –१४)

मगर जब इन्सान खुद शारिअ बन जायेगा तो इसका लेहाज नहीं रख सकता। बिदअत की आमेजिशों और कभी–कभी इजाफों के बाद दीन इस कदर दुशवार और पेचदार हो जाता है कि लोग मजबूर होकर ऐसे मजहब का जुआ अपने कन्धों से उतार देते हैं और खुदा ने तुम्हारे लिए दीन में कोई तंगी नहीं रखी" की नेमत छीन ली जाती है।

दीन व शरीअत की एक खुसूसियत इनकी आलमगीर एकसानी है। वह हर जमाना, और हर दौर में एक ही रहते हैं। दुनिया के किसी हिस्से का कोई मुसलमान दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में चला जाये तो उसको दीन व शरीअत पर अमल करने में न कोई दिक्कत पेश आयेगी न किसी मकामी हिदायतनामा और रहबर की जरूरत होगी। इसके बरखिलाफ बिदअत में एकसानी नहीं पाई जाती, वह हर जगह के मकामी सांचा और टक्साल से ढल कर निकलती है और वह तारीखी या मकामी असबाब और इनफेरादी मसालेह व अगराज का नतीजा होती हैं इसलिए हर मुल्क बल्कि इससे आगे बढ़कर कभी कभी एक एक सूबा और एक एक शहर और घर घर का दीन मुखतलिफ हो सकता है।

इन्हीं बातों की बुनियाद पर अल्लाह तआला के रसूल स० ने अपनी उम्मत को बिदअत से बचने और सुन्नत की हिफाजत की ताकीद फरमाई है। आप ने फरमाया :–

तर्जुमा : "जो हमारे दीन में कोई ऐसी नई बात पैदा करे जो उसमें दाखिल नहीं थी तो वह बात मुस्तरद है।

बिदअत से हमेशा बचो, इसलिए कि बिदअत गुमराही है, और हर गुमराही जहन्नम में होगी। (मिशकातुल मसाबीह) और आपने यह हकीमाना पेशगोई भी फरमाई :–

तर्जुमा : "जब कुछ लोग दीन में कोई नई बात पैदा करते हैं तो उसके बराबर कोई सुन्नन जरूर उठ जाती है। (मुसनद इमाम अहमद)

नबी स० के वारिसीन और शरीअत के हामिलीन का बिदअतों के खिलाफ जेहाद

सहाबाकिराम, और उनके बाद

(शेष पृष्ठ १२ पर)

13वीं किस्त

सीरतुन्नबी

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़लाक़

अल्लामा शिबली नोमानी

बच्चों पर शफ़क़त (स्नेह)

बच्चों पर बहुत शफ़क़त फ़रमाते थे। मामूल था कि सफर से तशरीफ लाते तो राह में जो बच्चे मिलते उनमें से किसी को अपने साथ सवारी पर आगे पीछे बिठालेते। (रास्ता में बच्चे मिलते तो उनको खुद सलाम करते)। (अबूदाऊद)।

एक दिन खालिद बिन सईद आप के पास आये उनकी छोटी लड़की भी साथ थी और सुर्ख रंग का कुर्ता बदन पर था। आपने फरमाया सना सना। हब्शी जबान में हसना को सना कहते हैं, चूंकि उनकी पैदाइश हबश में हुई थी इस लिए आप ने इसकी मुनासिबत से हब्शी उच्चारण (तलफ्फुज) में हसना के बजाय सना कहा। आंहजरत सल्ल० की पीठ पर जो नुबूवत की मुहर थी, उभरी हुई थी। बच्चों की आदत होती है कि गैरमामूली चीज नजर आये तो उससे खेलने लगते हैं। वह भी नुबूवत की मुहर से खेलने लगीं। खालिदा ने डांटा। आप सल्ल० ने रोका कि खेलने दो। (बुखारी)

एक दफा आप के पास कहीं से कपड़े आये जिन में एक काली चादर भी थी जिसमें दोनों तरफ आंचल थे, आपने मौजूद लोगों से राय ली कि इसे किस को दूं? लोग चुप रहे। आप ने फरमाया उम्मे खालिद को लाओ। वह आयीं तो आप ने उनको पहनाया और दो दफा फरमाया "पहनना और पुरानी करना।" चादर में जो बूटे थे आप उनको दिखा दिखा कर फरमाते थे। उम्मे खालिद की बेटी की कुन्नियत उम्मे खालिद थी देखना यह सना है यह सना है। ऊपर गुजर चुका है कि उम्मे खालिद हब्श में पैदा हुई थी और कई महीने तक वहीं रही थीं, इसलिए उनसे हब्शी जबान में बात किया।

एक सहाबी का बयान है कि बचपन में अन्सार के नखलिस्तान में चला जाता और ढेलों से मारकर खजूरें गिराता। लोग मुझ को आप के पास ले गये, आपने कहा ढीले क्यों मारते हो? जो जमीन पर टपकती हैं उनको उठा कर खा लिया करो। ढीले न मारो। यह कहकर मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआ दी।

मां–बच्चे की मुहब्बत की घटनायें आप को बहुत प्रभावित करती थीं। एक दफा एक बहुत गरीब औरत हजरत आयशा के पास आई, दो छोटी छोटी लड़कियों भी साथ थीं। उस वक्त हजरत आयशा के पास कुछ न था, एक खजूर जमीन पर पड़ी हुई थी वही उठा कर दे दी। औरत ने खजूर के दो टुकड़े किये और दोनों में बराबर बराबर तकसीम कर दिया। आंहजरत सल्ल० बाहर से तशरीफ लाये तो हजरत आयशा ने यह घटना बताई। इरशाद फरमाया, खुदा जिसको औलाद की मुहब्बत में डाले और वह उनका हक बजा लाये वह दोजख से महफूज रहेगा। (सही बुखारी)

हजरत अनस कहते हैं कि आंहजरत सल्ल० फरमाते थे कि मैं नमाज शुरू करता हूं और इरादा होता है कि देर में खत्म करूंगा कि एक दम सफ से किसी बच्चे के रोने की आवाज आती है और मुख्तसर (संक्षिप्त) कर देता हूं कि उसकी मां की तकलीफ होती होगी। (बुखारी)

यह मुहब्बत व शफ़क़त मुसलमान बच्चों तक सीमित न थी। बल्कि मुशरिकीन के बच्चों पर भी इसी तरह तरस खाते थे। एक दफा एक गजवः में चन्द बच्चे झपट में आकर मारे गये। आपको खबर हुई तो बहुत दुखी हुए। एक साहब ने कहा या रसूलुल्लाह ! वह मुशरिकीन के बच्चे थे। आपने फरमाया मुशरिकीन के बच्चे तो तुम से बेहतर हैं। खबरदार! बच्चों को कत्ल न करो। हर जान खुदा ही की फितरत पर पैदा होती है।

मामूल था कि जब फसल का नया मेवा कोई आप के पास लाता तो हाजिरीन में जो सब से जियादा कम उम्र बच्चा होता उसको इनायत फरमाते। बच्चों को चूमते और उनको प्यार करते थे। एक दफा आप इसी तरह बच्चों को प्यार कर रहे थे कि एक बदवी आया। उसने कहा तुम लोग बच्चों को प्यार करते हो। मेरे दस बच्चे हैं मगर अब तक मैंने किसी को प्यार नहीं किया आप ने फरमाया, अल्लाह तआला अगर तुम्हारे दिल से मुहब्बत को छीन ले तो मैं क्या करूं। (सही बुखारी व मुस्लिम)

जाबिर बिन सुमरः सहाबी थे। वह अपने बचपन की घटना बयान करते हैं कि एक दफा मैं ने आप सल्ल० के पीछे नमाज पढ़ी नमाज पढ़कर आप अपने घर की तरफ चले, मैं भी साथ हो लिया कि उधर से चन्द और लड़के निकल आये। आपने सबको प्यार किया और मुझ को भी प्यार किया। (सही मुस्लिम)

हिजरत के मौके पर अब मदीना में आप का दाखिला हो रहा था, अन्सार की छोटी छोटी लड़कियां खुशी से दरवाजों से निकल कर गीत गा रही थीं, जब आपा का उधर गुजर हुआ, फरमाया ऐ लड़कियो! तुम मुझे प्यार करती हो, सबने कहा, हां, या रसूलल्लाह! फरमाया, मैं भी तुम्हें प्यार करता हूं।

हजरत आयशा कम उम्री में ब्याहकर आई थीं। मुहल्ला की लड़कियों के साथ वह खेला करती थीं। आप जब घर में तशरीफ़ लाते तो लड़कियां आप का लेहाज कर के इधर उधर छुप जातीं। आप उन्हें तस्कीन देते और खेलने को कहते।

गुलामों पर शफ़क़त

आंहजरत सल्ल० गुलामों पर विशेष रूप से शफकत फरमाते थे। फरमाया करते थे कि यह तुम्हारे भाई हैं, जो खुद खाते हों इनको खिलाओ और जो खुद पहनते हो उनको पहनाओ। आप सल्ल० की मिल्कियत में जो गुलाम आते उनको हमेशा आप आजाद फरमा देते थे। लेकिन वह आप के एहसान की जंजीर से आजाद नहीं हो सकते थे। मां–बाप, कबीला, रिश्ता को छोड़कर उम्र भर आप की गुलामी को शरफ व अहोभाग्य जानते थे। जैद बिन हारिसः गुलाम थे। आंहजरत सल्ल० ने उनको आजाद कर दिया। उनके बाप उनको लेने आये, लेकिन रहमत के आस्ताना से एकदम इनकार कर दिया। जैद के बेटे उसामा से आप इतनी मुहब्बत करते थे कि आप फरमाया करते थे, अगर उसामा बेटी होती तो मैं इसको जेवर पहनाता। खुद अपने हाथ से उनकी नाक साफ करते थे।

गुलामों को लफज़ "गुलाम" सुनकर अपनी नजर में अपनी आप जिल्लत महसूस होती थी। आंहजरत सल्ल० को उनकी यह तकलीफ भी गवारा न थी, फरमाया कोई "मेरा गुलाम", मेरी लौन्डी, न कहे। "मेरा बच्चा" या "मेरी बच्ची" कहे, और गुलाम भी अपने आका को खुदावन्द न कहें, खुदावन्द खुदा है, आका कहें। आंहजरत सल्ल० को गुलामों पर शफकत का इतना लेहाज था कि मौत के समय सब से आखिरी यह वसीयत फरमाई कि गुलामों के मामले में खुदा से डरा करना।

हजरत अबूजर बहुत कदीमुल इस्लाम सहाबी थे और आप सल्ल० उनकी रास्तगोई की तारीफ करते थे। एक दफा उन्होंने अजमी (गैर अरब) गुलाम को बुरा भला कहा। गुलाम ने आप सल्ल० से जाकर शिकायत की। आपने अबूजर को घुड़की दी कि तुम में अब तक जिहालत बाकी है। यह गुलाम तुम्हारे भाई हैं। खुदा ने तुम को इनपर फजीलत दी है। अगर वह तुम्हारे मिजाज के अनुकूल न हों तो उनको बेच डालो। खुदा की मखलूक को सताया न करो जो खुद खाओ वह इनको खिलाओ, जो खुद पहनो इनको पहनाओ इनको इतना काम न दो जो वह न कर सकें, और इतना काम दो तो खुद भी उनकी मदद करो। (बुखारी)

एक दफा अबू मसऊद अन्सारी अपने गुलाम को मार रहे थे कि पीछे से आवाज आई, अबू मसऊद। तुम को जितना इस गुलाम पर इख्तियार है, खुदा को इससे जियादा तुम पर इतिख्यार है। अबू मसऊद ने मुड़कर देखा तो आंहजरत सल्ल० थे। अर्ज की या रसूलल्लाह ! मैं ने अल्लाह को राजी करने के लिए इस गुलाम को आजाद किया। फरमाया अगर तुम ऐसा न करते तो दोजख की आग तुम को छू लेती।

एक व्यक्ति आप के पास आया। अर्ज की या रसूलल्लाह ! मैं गुलामों का कुसूर कितनी दफा माफ करूं? आप खामोशा रहे उसने फिर अर्ज की। आपने फरमाया हर रोज सत्तर बार माफ किया करो।

आंहजरत सल्ल० के जमाने में एक खानदान में सात आदमी थे और सात आदमियों के बीच में एक ही लौन्डी थी। एक दफा उन में से एक ने उस लौन्डी को थप्पड़ मारा। आंहजरत सल्ल० को मालूम हुआ तो आपने फरमाया कि उसको आजाद कर दो। लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह ! हम सात आदमियों के बीच में यही एक खादिमा (सेविका) है। आपने फरमाया, अच्छा उस समय तक सेवा करे जब तक तुम को हाजत रहे, जब जरूरत न रहे तो वह आजाद है। (अबू दाऊद)

एक साहब के पास दो गुलाम थे जिनकी वह बहुत शिकायत करते थे, वह उनको मारते थे। बुरा भला कहते थे, लेकिन वह दोनों बाज न आते थे। उन्होंने आकर आंहजरत सल्ल० से शिकायत की, और उसका इलाज पूछा । आपने फरमाया, तुम्हारी सजा अगर उनके कुसूर के बराबर होगी

तो खैर वरना जितनी सजा जियादा होगी उसके बराबर तुम्हें भी खुदा सजा देगा। यह सुनकर वह बेकरार हो गये हुजूर (सल्ल०) ने फरमाया क्या इस शख्स ने अल्लाह का फरमान नहीं पढ़ा कि "हम कियामत के दिन न्यायतुला लगाऐंगे।" यह सुनकर उन्होंने अर्ज किया या रसूलल्लाह ! यह बेहतर है कि मैं इनको अपने से जुदा कर दूं, आप गवाह रहें कि अब वह आजाद हैं। गुलामों का लोग विवाह कर देते थे और फिर जब चाहते थे जबरन उनको अलग कर देते थे। चुनांचः एक व्यक्ति ने अपनी लौंडी से अपने गुलाम का विवाह कर दिया, और फिर दोनों को अलग करना चाहा। गुलाम ने आप सल्ल० के पास आकर शिकायत की। आपने मेंबर पर खुत्बा दिया कि लोग क्यों गुलामों का निकाह कर के फिर अलग कराना चाहते हैं। निकाह और तलाक का हक सिर्फ शौहर को है। (मुसनद इब्ने हंबल)

इसी रहम व शफकत का असर था कि अक्सर काफिरों के गुलाम भाग भाग कर आप सल्ल० के पास आ जाते थे, और आप उन्हें आजाद फरमा देते थें। माले गनीमत जब तकसीम होता तो आप उसमें से गुलामों को भी हिस्सा देते थे। जो गुलाम नये आजाद होते थे, चूंकि उनके पास कोई माल सरमाया नहीं होता था। इस लिए जो आमदनी वसूल होती थी उसमें सब से पहले आप उन्हीं को इनायत फरमाते थे।

औरतों के साथ बरताव

दुनिया में औरतें चूंकि हमेशा जलील रही हैं इस लिए किसी नामवर व्यक्ति के हालात में यह पहलू कभी पेशे नजर नहीं रहा कि इस मजलूम (व्यथित) गिरोह के साथ उसका व्यवहार क्या था। इस्लाम दुनिया का सबसे पहला मजहब है जिसने औरतों की हक रसी की और मान सम्मान के दरबार में उनको मर्दों के बराबर जगह दी। इसलिए आप सल्ल० की जीवनी की घटनाओं में हम को यह भी देखना चाहिए कि औरतों के साथ आप का व्यवहार व बरताव क्या था।

सही बुखारी में आंहजरत सल्ल० के ईला (पवित्र पत्नियों से चन्द रोज अलग रहना) का जो उल्लेख है उसमें हजरत उमर का यह कौल (कथन) नकल किया है कि मक्का में हम लोग औरतो को बिल्कुल नाकाबिले इल्तेफात (उपेक्षित) समझते थे। मदीना में अपेक्षाकृत (निस्बतन) औरतों की कदर थी लेकिन उतनी नहीं जिसकी वह पात्र थीं। आप सल्ल० ने जिस तरह अपने इर्शाद व अहकाम से उनके हुकूक (अधिकार) काइम किये, आप के बर्ताव ने और अधिक इसको मजबूत और विशिष्ट कर दिया।

आप सल्ल० के दरबार में चूंकि हर समय मर्दों का हुजूम रहता था, औरतों को वाज (प्रवचन) व नसीहत सुनने और मसाइल पूछने का मौका नहीं मिलता था। औरतों ने आकर प्रार्थना की कि मर्दों से हम ओहदा बरआ नहीं हो सकते, इसलिए हमारे लिए एक दिन खास मुकर्रर कर दिया जाये। आप सल्ल० ने उनकी दरख्वास्त कुबूल फरमाई और उनके दरबार का एक दिन मुकर्रर हो गया।

जिन लोगों ने इस्लाम की शुरूआत के समय हबश को हिज्रत की थी उन में असमा बिन्त उमैस भी थीं। खैबर की फतेह के जमाने में मुहाजिरीने हबश मदीना में आये तो वह भी आईं। एक दिन वह हजरत हफ्सः से मिलने गयीं। इत्तेफाक यह कि उस समय हजरत उमर भी मौजूद थे उनको देखकर पूछा यह कौन हैं? हजरत हफ्सः ने नाम बताया। हजरत उमर ने कहा, हां वह हब्श वाली, वह समन्दर वाली अस्मा ने कहा हां वही। हजरत उमर ने कहा हम लोगों ने तुम से पहले हिजरत की और इसलिए अल्लाह के रसूल सल्ल० पर जियादा हक है। उस्मा को सख्त गुस्सा आया। बोलीं हरगिज नहीं। तुम लोग आप सल्ल० के साथ रहते थे, वह मूर्खों को खिलाते थे, हमारा यह हाल था कि घर से दूर बेगाने हब्शियों में रहते थे, लोग हम को सताते थे और हर समय जान का डर लगा रहता था। यह बातें हो रही थीं कि अल्लाह के रसूल सल्ल० आ गये'। असमा ने कहा या रसूलल्लाह! उमर ने यह कहा। आपने फरमाया तुम ने क्या जवाब दिया। उन्होंने माजरा सुनाया। आप ने फरमाया, उमर का हक मुझ पर तुम से जियादा नहीं। उमर और उसके साथियों ने सिर्फ एक हिजरत की और तुम लोगों ने दो हिजरतें कीं। इस घटना की चर्चा फैली तो हब्श के मुहाजिरीन गिरोह दर गिरोह असमा के पास आते और आंहजरत सल्ल० के अल्फाज उन से बार बार दुहरवाकर सुनते। हजरत असमा का बयान है कि मुहाजिरीन हब्श के लिए दुनिया में कोई चीज आंहजरत सल्ल० के इन शब्दों से अधिक खुशी पैदा करने वाली न थी। (सही बुखारी)।

हजरत अनस बिन मालिक जो खादिमे खास थे उनकी खाला का नाम उम्मे हराम था। मालूम था जब आप सल्ल० कुबा तशरीफ ले जाते तो उनके पास जरूर जाते। वह अकसर खाना

लाकर पेश करतीं और आप नोश फरमाते। आप सो जाते तो बालों में से जुएं निकालतीं।

हजरत अनस की मां उम्मे सलीम से आप को बड़ी मुहब्बत थी, आप अक्सर उनके घर तशरीफ ले जाते, वह बिछौना बिछा देतीं। आप आराम फरमाते। जब सोकर उठते तो वह आप का पसीना एक शीशी में जमा कर लेतीं। मरते वक्त वसीयत की कि कफन में हनूत (खुशबू जो मुर्दा के लिए तैयार करते हैं उस पर मलने के लिए) मिलाया जाये तो अर्क (पसीना) मुबारक के साथ मिलाया जाये।

एक दफा हजरत अनस की मां ने आप की दावत की, खाना खुद तैयार किया था, आंहजरत सल्ल० ने खाना नोश फरमाकर फरमाया, "आओ मैं तुम्हें नमाज पढ़ाऊं। घर में सिर्फ एक चटाई थी, और वह पुरानी होकर काली पड़ गयी थी। हजरत अनस ने पहले पानी से धोया और फिर नमाज के लिए बिछाया। आप सल्ल० ने इमामत की। हजरत अनस और उनकी दादी और यतीम (गुलाम) सफ बान्ध कर खड़े हुए। आप ने दो रकअत नमाज अदा की और वापस आये। (बुखारी)

हजरत अबू बक्र की बेटी असमा हजरत जुबैर से ब्याही थीं मदीना में आईं तो उस वक्त हजरत जुबैर की यह हालत थी कि एक घोड़े के सिवा और कुछ न था। हजरत असमा खुद ही घोड़े के लिए जंगल से घास लातीं और खाना पकातीं। हजरत जुबैर को जो जमीन आंहजरत सल्ल० ने अता फरमायी थी और जो मदीना से दो मील पर थी वहां से खजूर की गुठलियां सर पर लाद कर लातीं एक दिन वह गुठलियां लिये हुए आ रही थीं कि आप सल्ल० ने देखा। आप उस वक्त ऊंट पर सवार थे। ऊंट को बिठा दिया कि वह सवार हो लें। हजरत असमा शर्माईं। आंहजरत सल्ल० ने यह देख कर कि वह लजा रही हैं कुछ नहीं फरमाया और उन को छोड़कर आगे बढ़ गये। हजरत असमा का बयान है कि इस के बाद हजरत अबू बक्र ने एक खादिम भेजा जो घोड़े की खिदमत करता था, मुझको इस कदर गनीमत मालूम हुआ गोया मैं गुलामी से आजाद हो गयी।

एक बार रिश्तेदारी की बहुत सी औरतें बैठी हुई आप सल्ल० से बढ़–बढ़ कर बातें कर रही थीं। हजरत उमर आये तो सब उठकर चल दीं। आप सल्ल० हंस पड़े। हजरत उमर ने कहा, खुदा आप को प्रसन्न रखे, क्यों हंसे? फरमाया इन औरतों पर तअज्जुब हुआ कि वह तुम्हारी आवाज सुनते ही सब आड़ में छुप गयीं। हजरत उमर ने उनको सम्बोधित कर के कहा, ऐ अपनी जान की दुश्मनो। मुझ से डरती हो और आप सल्ल० से नहीं डरती। सबने कहा तुम अल्लाह के रसूल की निस्बत सख्त मिजाज हो। (बुखारी)

एक दफा आयशा के घर में मुंह ढांक कर सोये हुए थे। ईद का दिन था। छोकरियां गा बजा रही थीं। हजरत अबू बक्र आये तो उन को डांटा। आंहजरत सल्ल० ने फरमाया इनको गाने दो इनकी ईद का दिन है। (मुस्लिम)

औरतें बड़ी दिलेरी के साथ बेधड़क आप सल्ल० से मसाइल पूछती थीं, और सहाबा को उनकी इस डिठाई पर हैरत होती थी लेकिन आप किसी तरह की नागवारी नहीं फरमाते थे। चूंकि औरतें आमतौर से नाजुक होती हैं, उनकी खातिरदारी का बड़ा ध्यान रखते थे। अंजशा नाम का एक हब्शी गुलाम हुदीख्वां था, यानी ऊंट के आगे हुदी (एक प्रकार का गीत) पढ़ते जाते थे। एक दफा सफर में आप की पवित्र पत्नियां साथ थीं, अंजशा हुदी पढ़ते जाते थे। ऊंट ज्यादा तेज चलने लगे। तो आपने फरमाया अंजशा! देखो शीशे (औरतें) टूटने न पायें। (जारी)

प्रस्तुति : हसन अंसारी

(पृष्ठ ८ का शेष)

इस्लाम के इमाम व फकीह और अपने अपने समय के मुजद्दिदीन ने हमेशा अपने अपने जमाने की बिदअत की सख्ती से मुखालिफत की और इस्लामी समाज में इनको फैलने से रोकने की जानतोड़ कोशिश की। इन बिदआत से खुश अकीदा लोगों के जो जाती फायदे जुड़े हैं उनकी तस्वीर कुरआन ने इस तरह खींची है :–

तर्जुमा : "ऐ ईमान वालो! अक्सर अहबार व रोहबान लोगों के माल नामशरू तरीके से खाते हैं, और अल्लाह की राह से बाज रखते हैं। (सूरः तौबा – ३४)

इसकी बिना पर उनको सख्त मुखालफतों और मुसीबतों का सामना करना पड़ा। लेकिन उन्होंने इसकी परवाह नहीं की और इसको अपने समय का जेहाद समझा। और उनकी कोशिशों से बहुत सी बिदअत का इस तरह खात्मा हुआ कि उनका अब सिर्फ जिक्र रह गया और जो बाकी है उनके खिलाफ उलमाए हक्कानी अब भी सफआरा है–

"तर्जुमा : "इन मोमनीन में कुछ लोग ऐसे भी हैं कि उन्होंने जिस बात का अल्लाह से अहद किया था उसमें सच्चे निकले, फिर कुछ तो उनमें वह हैं, जो अपनी नज्र पूरी कर चुके, और कुछ उनमें मुश्ताक हैं, और उन्होंने जरा हेर फेर नहीं किया।"

(सूर : अहजाब–२३)

बनी अब्बास

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

अबुल अब्बास सफ्फाह

मरवान के बाद रहा सहा खटका भी निकल गया और बादशाहत बिल्कुल सफ्फाह के हाथ में आ गई। चूंकि इसको नई नई सलतनत मिली थी, दुश्मनी का प्रभाव जगह जगह मौजूद था। इसलिए उसने सख्ती शुरू कर दी और सख्ती में इतना हद से बढ़ गया कि उसका नाम सफ्फाह अर्थात खून बहाने वाला पड़ गया।

उमवियों से इसे बड़ा खतरा था। वह समझता था कि जब तक इन में कुछ भी दम बाकी रहेगा, उस समय तक उसको इत्मिनान नसीब न होगा। अतः उसने बहुत से उमवियों को पकड़ कर कत्ल करा दिया। उनकी दुश्मनी में उमवी बादशाहों की लाशें कबरों से निकालवा कर फांसी पर चढ़वा दीं। बनी उमैया में एक अब्दुर्रहमान बच निकला। यह भाग कर उन्दलुस पहुंचा और कुछ ही दिनों में वहां एक अच्छी खासी हुकूमत कायम कर ली जो सैकड़ों वर्षों तक कायम रही।

सफ्फाह के जमाने में नई नई हुकूमत कायम हुई थी। इस लिए जगह जगह बगावतें हुईं। बहुत से गवर्नर बागी हो गए लेकिन सफ्फाह ने बहुत तत्परता से सब को काबू में कर लिया।

१३ जिलहिज्जा (बकरईद) स० १३६ हि० को सफ्फाह की मृत्यु हुई। यह एक तरफ बड़ा जालिम था, दूसरी तरफ बड़ा दानी दाता था। दोनों हाथों से रूपया लुटाता था।

मन्सूर

सफ्फाह के बाद मंसूर तख्त पर बैठा। यह बड़ा बहादुर, बुद्धिमान, समझदार और बड़े रोबदाब का बादशाह था। इसको भोग विलास के सामानों से बड़ी नफरत थी और सिपाहियो की तरह जिन्दगी बसर करता था। इसके जमाने में कुछ तो बनी उमैया के बचे खुचे लोगों से झगड़े हुए, कुछ सय्यदों (हजरत फातिमा रज़ि० की औलाद) से मुकाबले हुए, कुछ खुद अपने सरदारों और सिपहसालारों से लड़ाइयां हुईं लेकिन मनसूर ने अपने साहस तथा नीतियों से सब को पराजित किया।

सबसे पहले मंसूर को अपने चचा अब्दुल्लाह बिन अ़ली से लड़ना पड़ा। मामला सख्त था लेकिन अबू सालिम खुरासानी के उपायों से अब्दुल्लाह की पराजय हुई और पकड़ कर मंसूर के सामने लाया गया जहां कैद कर दिया गया और इसी दशा में (स० ४७ हि०) मर गया।

अबू मुस्लिम पहले ही कुछ कम न था लेकिन इस विजय के बाद तो उसकी ताकत इतनी बढ़ गयी कि अब सलतनत उसकी इच्छा के अनुसार चलती थी। मंसूर कोई बच्चा तो न था, वह भी दुन्या देख चुका था तुरंत ताड़ गया और किसी तरह तरकीब से उसे दरबार में बुला कर कत्ल कर दिया। इसके बाद इत्मिनान हो गया और मुहम्मद बिन नफ्सुज्जकीयः के सिवा कोई लड़ाई नहीं हुई।

ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि बनी उमैया के खिलाफ जो कुछ काम किया गया, वह सब बनी फातिमा (सय्यदों), के नाम से किया गया। आशा थी कि यही लोग आगे चलकर बादशाह होंगे लेकिन जब वक्त आया तो हुकूमत अब्बासियों के हाथ में चली गई और सफ्फाह बादशाह हो गया लेकिन फिर भी ख्याल था कि हुकूमत न सही इस जमाने में सय्यदों को आराम जरूर मिलेगा लेकिन अफसोस कि अब्बासी बनी उमैया से भी सख्त निकले। पहले तो कभी कभार कुछ हो जाता था लेकिन अब तो रोज ही गर्दनें कटने लगीं। मजबूरी में बेचारों को मुकाबले में खड़ा होना पड़ा।

मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह नफ्सुज्जकीयः हजरत इमाम हसन रज़ि० के पर पोते थे। उन्होंने अब्बासियों का यह बढ़ता हुआ जुल्म देखा तो ताब न रही और अपने भाई इब्राहीम के साथ निकल पड़े। (मुहम्मद नफ्सुज़्ज़कीयः) ने मदीना को अपना मुख्यालय (सदर मुकाम) बनाया और इब्राहीम ने बसरा को। मंसूर ने मुकाबले के लिए फौजें भेजीं पहले मदीना में मुहम्मद से मुकाबला हुआ जिस में उन्हें प्राजय हुई। अब्बासी सेनापति ने सिर काट कर मंसूर के पास भेजा। उसके बाद बसरा में इब्राहीम से मुकाबला हुआ और वह भी पराजित होकर मारे गये

और मंसूर को बिल्कुल इत्मिनान हो गया।

आपस के इन झगड़ों को देखकर रूमियों का साहस बढ़ने लगा लेकिन मंसूर ने अपनी तदबीर से उन्हें पराजित किया। स० १५८ हि० मंसूर का देहान्त हो गया। यद्यपि सारी उम्र लड़ाई झगड़े में बीती लेकिन मरते समय सलतनत की बुनियाद मजबूत हो चुकी थी। उस ने अपनी राजधानी के लिए एक नया शहर बगदाद आबाद कियाजो आगे चलकर मुसलमानों का सबसे बड़ा शहर हो गया।

महदी

मंसूर के बाद उसका बटा महदी बादशाह हुआ। झगड़े पहले ही समाप्त हो चुके थे। इसलिए उसके जमाने में शांति रही। रूमियों से अलबत्ता दो एक लड़ाइयां हुई जिसमें मुसलमानों को फतह हुई। हां उसके जमाने में एक बड़े मज़े की घटना हुई। एक काने और लंगड़े आदमी ने जो मकना कहलाता था। उस ने खुदाई का दावा किया। अपनी कानी आंख छुपाने के लिए अपने मुंह पर एक सोने का चेहरा चढ़ाए रहता था जैसे खेल तमाशों में नकल भरने वाले चेहरे लगाते हैं। यह तरह तरह के ..... के तमाशे दिखाता था। इसलिए बहुत से मूर्ख उसके जाल में फंस गए और मकना उनको लेकर महदी के मुकाबले के लिए खड़ा हो गया। मियां लंगड़े हिम्मत तो कर गए लेकिन बादशाह का मुकाबला मुश्किल था। नतीजा यह हुआ कि पराजित होकर आत्महत्या (खुदकशी) कर ली।

सन् ६९ हि० में महदी का देहान्त हो गया।

हादी

महदी के बाद उस का लड़का हादी तख्त पर बैठा उसने एक साल कुछ महीने बादशाहत की उसके जमाने में कोई खास बात नहीं हुई। हुसैन बिन हसन मुसल्लस से अलबत्ता मुकाबला हुआ जिसमें उन्हें शिकस्त हुई और सब लोग मारे गये। केवल दो आदमी इदरीस बिन अब्दुल्लाह और यहया बिन अब्दुल्लाह किसी तरह बच कर निकल गए। यहया ने देलम में जाकर फिर मुकाबला किया और इदरीस ने अफरीका जाकर नई सलतनत काईम की।

हारून रशीद

सन् १६० हि० में हादी की मृत्व हुई और उसकी जगह पर हारून रशीद बादशाह बनाया गया। हारून का जमाना बेहतरीन जमाना था। बगदाद की रौनक व सजावट का क्या कहना। तरह तरह की इमारतें, भिन्न–भिन्न प्रकार के बाग, उम्दा उम्दा महल, खूबसूरत खूबसूरत मस्जिदें, अच्छे अच्छे मीनार, साफ साफ सड़कें, भरे पुरे बाजार दुन्या की कौन सी चीज थी जो वहां न थी। मालोदौलत रूपये पैसे की वह अधिकता थी कि क्या कहा जाए और बगदाद ही की क्या सारे देश में कंचन बरस रहा था। गांव के गांव, देहात देहात, खुशहाली फैली थी। बादशाह खुश, प्रजा राजी, मुल्क आबाद अजीब खैर व बरकत का जमाना था।

हारून के जमाने में वैसे तो शान्ति रही, खुरासान और कैरवान में अलबत्ता कहीं कहीं कुछ झगड़े हुए तो उसनेअपने उपायों से दबा दिये लेकिन इदरीस बिन अब्दुल्लाह (जिन के बारे में ऊपर पढ़ चुके हो) किसी प्रकार काबू में न आए और अफरीक पहुंच कर मराकश के करीब अपनी एक अलग इदरीसी हुकूमत काईम कर दी। उन्दुलुस शुरू से ही अलग था, अब यह दूसरी हुकूमत भी बनी अब्बास से आजाद हो गई। रूस में उन दिनों मलका हुकूमत करती थी। उसने सालाना खिराज के वादे पर हारून से सुलह कर ली। इसके बाद सकफूर बादशाह हुआ तो उसने रकम अदा करने से इन्कार कर दिया और हारून को लिखा कि खैरियत चाहते हो तो वसूल की हुई रकम तुरंत वापस कर दो नहीं तो हम तलवार से होश ठिकाने कर देंगे। पत्र पढ़कर हारून के बदन में आग लग गई। फौरन अपने कलम से लिखा "इस का जवाब सुनकर क्या करोगे, आंखों से देख लेना।" उसके बात तुरन्त फौज लेकर रवाना हो गया और पर पहुंच कर आनन फानन शहर को फतह कर डाला। सकफौर में इतना दम कहां था कि जम कर लड़ता दो ही चार हमलों में होश उड़ गए और सालाना खिराज पर सुलह कर ली। उसके बाद हारून वापस हुआ लेकिन अभी शाही फौजें रास्ते में ही थीं कि सक्फूर ने अहद (बचन) तोड़ डाला। हारून ने सुना तो आग बगूला हो गया। तुरन्त फौजें लेकर पलटा। अब की सकफौर के मिजाज दुरुस्त हो गए और खिराज देते ही बनी। (जारी)

अनुवाद : हबीबुल्लाह आजम

डिन्मार्की अशिष्ट से

वह तो हैं उत्तम सृष्टि
और तू पापी अशिष्ट
अब तो नाता हो गया
नर्क से तेरा घनिष्ट

ताक़त का नशा खतरनाक है

मौलाना मुहम्मद राबिअ हसनी, नदवी
अध्यक्ष आल इण्डिया मुस्लिम प्रसनल ला बोर्ड

इज्जत और बेइज्जती का मसअला इन्सानों के लिए गैर मअमूली अहम्मीयत रखता है। कभी कोई इहानत आमेज रवैया या तहकीर रखने वाला कोई जुमला दो फरीकों के दरमियान जंग छिड़ जाने का बाअिस होता है और दो शख्शों के दरमियान होता है तो इहानत महसूस करने वाला लड़ने मरने पर आमादा हो जाता है। तारीख में इसकी बहुत सी मिसालें मिलती हैं। इन्सानों की मुतअद्दिद जंगें ऐसे किसी जुमले के नतीजे में पेश आई हैं। इस की मिसालें हर जिहन में मौजूद होंगी, कोई शख्स किसी के सामने उसके बाप का तहकीरी (अपमानित) अन्दाज में उसका जिक्र या तमस्खुर के अन्दाज में उसका हिल्या (रूप) दिखाए या बताए तो सिवा इस के कि सुनने वाला बिल्कुल बेवकूफ (मूर्ख) बेशऊर या जलील तबीअत (तुच्छ स्वभाव) का हो, नहीं तो वह बरदाश्त नहीं कर सकता। और इन्तिकाम (बदला) लिये बिगैर छोड़ नहीं सकता। अभी गुजिश्ता (बीते हुए) चन्द दिनों में यूरोप और अमरीका के सहाफियों (पत्रकारों) दानिश्वरों (बुद्धिजीवियों) और काइदीन (नेताओं) में से मुतअदिद अफराद ने मुसलमानों की मुकद्दस शख्सीयत के सिल्सिले में इहानत आमजे रवैया (अपमानित बरताव) इख्तियार करने पर बजाए मजम्मत (निन्दा) के मुतकब्बिराना (घमण्ड) रवैया इख्तियार किया और जब मुसलमानों ने अपनी नागवारी का इजहार किया तो उलटा इस नागवारी को बुरा करार दिया और तारीख की अजीम (महान) शख्सीयत की तहकीर के रवैये को सहीह करार दिया।

यूरोप के यह दानिश्वर, काइदीन अपने अलावा गैरों को अपने मुकाबले में कम समझने का रवैया आज से नहीं बल्कि दो सदी कब्ल से अपनाए हुए हैं। वह सफेद फाम (श्वेत चाम) कौमों के अलावा कौमों को कमतर सतह (नीचे स्तर) की मख्लूक समझते हैं और जिस से उनको इख्तिलाफ होता है, उसकी सिर्फ तहकीर ही नहीं बल्कि उसकी बातों को बिगाड़ कर पेश करने का तरीका इख्तियार करते हैं। यूरोप व अमरीका के मुस्तशरिकीन (प्राच्यविद्या विशारदों) ने अपनी तस्नीफात (रचनाओं) व तहकीकात (अन्वेषणों) में कसरत से यह रवैया इतिख्यार किया और उनके हुकूमती अफराद ने मशरिकी कौमों के साथ दबाव और तहकीर का रवैया मुसल्लत रखा और मशरिकी अक्वाम कई सदी से ऐसी कमजोर रही हैं कि जिल्लत (अपमान) को बरदाश्त करने पर मजबूर होती रहीं, लेकिन कोई कितना ही ताकतवर हों जियादा लम्बी मुद्दत तक अपने जौर व जुल्म पर काइम नहीं रह सकता, हालात बदलते हैं और नीचे वाला ऊपर पहुंच जाता है और ऊपर वाला नीचे चुनांचि यूरोप की इस्तिअमारी ताकतों (साम्राज्यीय शक्तियों) को बिलआखिर अपने मातहत मशरिकी मुल्कों को छोड़ना पड़ा और अपने ही मुल्कों तक महदूद (सीमित) हो जाना पड़ा, इस तरीके से साबिका (पूर्व) सख्त हालात तो बदल गये लेकिन इन साम्राज्यीय ताकतों के मिजाज में तबदीली नहीं आई अब वह बैनल अक्वामी (अन्तर्राष्ट्रीय) सियासत और बैनल अक्वामी इक्तिसादियात (अर्थशास्त्र) के जरीअे मशरिकी कौमों पर अपनी बरतरी (बड़ाई काइम रखने के लिए कोशां रहते हैं) और इसके लिए उनको अपनी अस्करी बाला दस्ती (शासनीय सेना) से मदद मिलती है।

जहां तक मुसलमानों का मसअला है तो वह इन हालात से गुजिश्ता मुद्दत (भूत काल) में तक्लीफ उठाते रहे हैं। और अब भी उनसे वक्तन फवक्तन (समय–समय) पर सामना होता रहता है जिस की तक्लीफ और उसका दर्द उनके दिलों में बजा तरीके से पैदा होता है और इस तरह के रवैये से सारी मुस्लिम कौमों में जिन को मगरिबी मुल्कों की जियादती से वास्ता पड़ता रहता है, बे करारी और नागवारी बढ़ती जा रही है और उसके नतीजे में उनको वक्तन फवक्तन बड़ी कुर्बानी देनी पड़ी है। लेकिन अब मुसलमानों की एक खासी तअदाद उन मगरिबी मुल्कों में

पहुंच कर वहां की शहरी (नागरिक) बन चुकी है और इल्मी व सकाफती लिहाज से उनको उन की हमसरी (बराबरी) हासिल हो गई है। और उनके जब ऐसे तहकीरी मुआमले में कोई वास्ता पड़ता है तो उनमें उनसे नफरत का जज्बा पैदा होता है।

ईजा रसां (दुख दायक) कारटूनों से जो रवैया डिन्मार्क से शुरू होकर कई यूरोपी मुल्कों में फैला और उसपर जो जिद मगरिबी मुमालिक (देशों) की मुतअद्दिद रहनुमाओं बल्कि उन सबके सरबराह अमरीका की तरफ से ज़ाहिर हुई तो सब इन्साफ पसन्दों (न्याय प्रेमियों) की तरफ से इस पर हैरत व इस्तिअजाब (आश्चर्य) जाहिर हुआ और उनके इस रवैये पर आलमी सतह पर ना पसन्दीदगी और नागवारी जाहिर की गई और की जा रही है। इन कारटूनों का सबसे जियादा बद तमीज़ी का पहलू यह है कि मुसलमानों के सरताज जिन पर मुसलमान अपनी जानें फिदा करते हैं हुजूर रसूले मक्बूल और हम सब के आका हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तहकीरी (अपमानित) कारटून बनायागया जो कि न सिर्फ यह कि जलील हरकत है बल्कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फिदाइयों से एक एअलाने जंग है। चुनांचि इस्लामी मुल्कों में जो सख्त इहतिजाज के वाकिआत पेश आ रहे हैं वह जलील हरकत का रद्दे अमल हैं। अगर यूरोप के यह दानिश्वर और काइदीन अपने खराब रवैये की खतरनाकी को नहीं महसूस करते तो हालात बहर हाल उनको इस के समझने पर मजबूर कर देंगे, लेकिन उस वक्त तक उन को खासा नुक्सान उठाना पड़ेगा और उनके खिलाफ आलमी सतह पर जो नफरत फैल जाएगी वह भी उनके लिए ताजयान–ए–इबरत (शिक्षात्मक कोड़ा) होगा, इसलिए कि मुसलमान इस दुन्या में अब कम नहीं है। दुन्या की २० फीसदी आबादी में और सारे मुल्कों में फैले हुए हैं। वह अपने मुक्तदा और आका हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इहानत को बरदाश्त करना तो दूर की बात है वह अपनी और उम्मते मुस्लिमा के मुआमले में भी तहकीरी रवैया बरदाश्त नहीं कर सकते और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मुआमला तो यह है कि साफ साफ कह दिया गया है कि मुसलमान का ईमान इस के बिगैर मुकम्मल नहीं कि उसको अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से महब्बत अपनी जात के मुकाबले में भी और अपने मां बाप और अपने अहल व अयाल के मुकाबले में भी जियादा हो और सहाब–ए–किराम का हाल तो यह था कि उन के कहने वाले ने यह कहा कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पैर में कान्टा चुभ जाए और उसके बदले में हमारी जान बच जाए तो हम अपनी जान बचाना कबूल नहीं, और उनके एक शाअिर ने कहा कि मेरे बाप, मेरे दादा और खुद मेरी इज्जत व आब्रू हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इज्जत पर कुर्बान है। यह है वह एहसास जो हर मुसलमान के लिए जरूरी है।

हम मुसलमानों को इसी की तअलीम दी गई है। लिहाजा यह तवक्कुअ करना कि मुसलमान इस को बरदाश्त कर लेंगे बड़ी गलत फहमी की बात है कि इजहारे राय की आजादी के यह मअना (अर्थ) नहीं हो सकते कि आप जिस को चाहें अपने अल्फाज या नोके कलम से जख्मी कर दें, और उसकी मजम्मत (निन्दा) हो तो उसको लाइकें इअतिना (ध्यान योग्य) न समझें। मगरिबी दुन्या का इहसासे बरतरी (बड़ा समझना) जब जुल्म की हद तक पहुंच जाए और गैर शरीफाना अन्दाज को सहीह समझने लगे तो यह बात उसकी बदकिस्मती का बाअिस (कारण) समझना चाहिए और उससे खुद मगरिबी दुन्या को जो नुक्सान पहुंच सकता है उसको समझना चाहिए। इस वक्त मगरिबी काइदीन (नेताओं) के रवैये से नागवारी और नफरत आग की तरह फैलती जा रही है। मगरिबी दुन्या को अक्ल इस्तिअमाल करना चाहिए। और वह जाइज तरीका इस्तिअमाल करना चाहिए जिस से यह आग बुझ सके–

Mohd. Saleem

Mob. : 9415782827

(R) 268177, 254796

New King Shoes

Bata, Liberty, Action, Red Chief

Shop No. 8-9, New Market,

Nishat Ganj, Lucknow-226006

लोक तंत्र का ढलता सूरज

सईद सहरवर्दी

१०दिसम्बर १९४८ को मानवाधिकार का विश्व घोषणा पत्र स्वीकार किया गया था। जिन देशों ने घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किये थे वह सब मानवाधिकार के कार्यान्वयन के पाबन्द हैं। व्यवहार में जहां शख्सी हुकूमत है वहां मानवाधिकार के लागू करने की बात नहीं की जा सकती। जो देश लोकतांत्रिक व्यवस्था से जुड़े होने का दावा करते हैं उनके किरदार को जांचने के लिए मानवाधिकार को कसौटी बनाया जा सकता है। भारत में मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष सुप्रीम कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायधीश ए०एस० आनन्द ने इस बात की शिकायत की है कि फौजदारी के मुकदमों में ८० प्रतिशत मुजरिम बरी हो जाते हैं। और मजलूम भयभीत रहते हैं। अवाम का न्यायालय पर विश्वास घटता जा रहा है, यह भी मानवाधिकार की पामाली है।

जब लोकतंत्र की चर्चा होती है तो पहले अमरीका का जिक्र होता है इसके बाद भारत का अमरीका के पास टेकनोलाजी है, फौजी ताकत है सारी दुनिया का सब से बड़ा लोकतंत्र है। अमरीका को लोकतंत्र व्यवस्था की उम्र हिन्दुस्तान से ज्यादा है। हिन्दुस्तान की लोकतान्त्रिक व्यवस्था ने आधी शताब्दी से ज्यादा का सफर तय कर लिया है। आज हम उस जगह हैं जब यह देखना उचित है कि दोनों देशों में लोकतंत्र में कितनी जान है? और कितना सिर्फ ढांचा है ?

यह प्रश्न जरूरी हैं। यह जानने के लिए कि हम किस हाल में जी रहे हैं, कितना लोकतंत्र है और कितनी महज खुशफहमी या गलत फहमी ? यह प्रश्न इस लिए अधिक महत्व रखता है अमरीका ने दुनिया में लोकतंत्र की ठेकेदारीा ले रखी है। इस लोकतंत्र के नमूने ईराक और अफगानिस्तान में देखे जा सकते हैं। प्रश्न यह है कि अमरीका का यह अधिकार किसने दिया कि दूसरे देशों पर हमला करके अपनी मर्जी की सरकार बनाये? वह सरकारा जो हमला करने वाली अमरीकी फौज की मौजूदगी में बनी हो, उसे लोकतान्त्रिक कहना लोकतंत्र के सार के साथ ज्यादती है।

सारी दुनिया की पाठय पुस्तकों में यह बात पढ़ाई जाती है कि दूसरा महायुद्ध १९४५ में समाप्त हो गया। तीसरे महायुद्ध की बात कोई नहीं करता। क्या यह उचित है? हकीकत यह है अमरीका ने दूसरे महायुद्ध के दौरान अपने दोस्त सोवियत यूनियन के विरूद्ध तीसरा महायुद्ध उसी दिन शुरू करदिया था जिस दिन दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ था। इसे विश्व युद्ध कहना उचित होगा। यह दुनिया के हर भाग में लड़ा गया और आज भी लड़ा जा रहा है। एक और गौर तलब बात यह है कि विश्व–शान्ति की सुरक्षा और सलामती के लिए जो संस्था काइम की गई थी वह अपंग और बेअसर हो गयी है। ऐसी स्थिति में यह मानने में कोई कबाहत (संकोच) नहीं होना चाहिए कि हम एक ऐसी जंग के साथ जी रहे हैं जिसका एलान नहीं किया गया है। आप इसे जंगल का राज कह सकते हैं या अमरीका की साम्राज्यकी अमलदारी दोनों में ज्यादा फर्क न होगा।

जब दूसरा महायुद्ध समाप्त हुआ तो तिहाई पूर्वी यूरोप सोवियत यूनियन की तहवील में था। यह अन्देशा था कि शेष दो तिहाई पश्चिमी गौरव जंग की तबाही के बाद सोवियत यूनियन के साथ न हो जाये। यह क्षेत्र औद्योगिक रूप से विकसित था। यह अगर सोवियत यूनियन के पास चला जाता तो उसकी ताकत बढ़ा सकता था। आशंका की बुनियाद पक्की थी। योरप के तमाम देशों में ताकतवर कम्यूनिस्ट पार्टियां मौजूद थीं। उनके असर को बढ़ने से रोकने के लिए मार्शल प्लान के अन्तर्गत बड़ी आर्थिक मदद दी गई।

पश्चिमी योरप को सशस्त्र करने के लिए उत्तरी अटलांटिक सन्धि (नाटो) अस्तित्व में आई। यह फौजी संस्था आज भी मौजूद है अमरीका की फौजी ताकत में वृद्धि का काम करती है। ईराक पर हमले और कब्जे के दौरान बाज देशों ने अमरीका का साथ देने के लिए अपने फौजी दस्ते उपलब्ध किये। सोपानवार अमरीका ने सारी दुनिया के महत्वपूर्ण ठिकानों पर अपने फौजी अड्डे काइम किये हैं।

पास्तिान और बादशाही ईरान बगदाद पैक्ट में शामिल होकर अमरीका के दोस्त बन गये। पाकिस्तान को यह

आशा थी कि शायद अमरीकी असलहे की मदद से वह पूरा कश्मीर हासिल कर सके। भारत इस खेल को समझता था। उसने पश्चिमी ऐशिया में 'सेन्टो' ओर दक्षिणी ऐशिया केएिल 'सीटो' का भरपूर विरोध किया। सीटो में भी पाकिस्तान शामिल था क्योंकि उस समय तक पूर्वी पाकिस्तान अलग नहीं हुआ था। अमरीका को अपने आलमी अजाइम (विश्व को अपने प्रभाव में लेने का इरादा) में कामयाबी भी हुई। और नाकामी का मुंह भी देखना पड़ा। पहले अमरीका अपने पिठ्ठू मुल्क की असलहों और डालरों से मदद करता था। यह तरीका चीन में कोमन्टांग की च्यांग काईशेक की हुकूमत को नहीं बचा सका। अब वह ताईवान तक सीमित है। अमरीका इसकी चौकीदारी करता है। कोरिया में अमरीका का अवामी चीन से टकराव हुआ। अमरीका कामयाब न हो सका। उत्तरी कोरिया अमरीका की नजरों में खटकता जरूर है। उसके पास ऐटमी क्षमता होने के कारण स्वयं या दक्षिणी कोरिया ाके जरिये उस पर हमला नहीं कर रहा है। शायद इस का एक कारण यह है वह चीन से टकराव के लिए आमादा नहीं दिखाई देता। वियतनाम और कोरिया के कटु अनुभवों ने यह सबक दिया है।

पूर्वी और दक्षिणी ऐशिया में मुंह की खाने के बाद मध्य और पश्चिमी ऐशिया अमरीका कीा साम्राज्य के निशाने पर रहा है। पहले ईरान के इस्लामी इन्कलाब के बाद सद्दाम हुसैन के जरिये ईरान पर हमला कराया गया। आठ वर्ष की जंग के बाद वह शाह को ईरान के तख्त पर वापस नहीं ला सके। बहरहाल ईरान को मुसल्लह करने में अमरीका का किरदार महत्वपूर्ण रहा है। रूस के अफगानिस्तान में कदम रखने के बाद अमरीका को वहां हस्तक्षेप करनेका मौका मिल गया। पाकिस्तान का सानिध्य काम आया। अमरीका की सरपरस्ती में रूप विरोधी फ्रन्ट बन गया। अमरीकी असलहा से ज्यादा रूसी अस्लहे छीन कर जियाले अफगानिस्तान वियतनाम बन गया।अफगानिस्ताना का नाकाम तजुर्बः सोवियत यूनियन के खात्मे को खाड़ी के देशों में मजबूती से कदम जमाने का मौका दिया। इस समय सऊदी अरब और तमाम खाड़ी इन्कलाब और ईराक के मुदत पर हमले ने इलाके की तमाम शख्सी हुकूमतों को भयभीत कर रखा है। यह बात अभी पूरी तरह खुलकर सामने नहीं आयी कि वह कौन सा मन्त्र था जिसने सोवियत यूनियन जैसे ताकतवर मुल्कों को टेकना साजी और फौजी ताकत के बावजूद पराजित कर दिया। बहर हाल अमरीका की यह बहुत बड़ी कामयाबी है जिसके दूरगामी प्रभावा आज भी देखने और महसूस कियेजा सकते हैं। सोवियत यूनियन की मौजूदगी की वजह से अमरीका के बिल्कुल पास क्यूबा फुदल कास्त्री की अगुवाई में आज भी एक आजाद देश है। सोवियत यूनियन के खात्मे ने एक ऐसी 'एक ध्रुवी दुनिया' पैदा की है जिस में अमरीका का कोई हरीफ (प्रतिद्वन्द्वी) दिखाई नहीं देता। अगर सोवियत यूनियन मौजूद होता तो ईराक और अफगानिस्तान की मौजूदा दुर्गत शायद मुमकिन न होती। एक जमाना था जब दुनिया के मजलूम इन्सानों के लिए सोवियत यूनियन उम्मीद का विराग था। पं० जवाहर लाल नेहरू जैसे लोग को कम्यूनिस्ट नही थे वह भी सोवियत यूनियन को मिसालीा रियासत समझते थे। अमरीका का लोकतंत्र उस समय भी नव आजादा दूसरे महायुद्ध के बाद जो देश साम्राज्य की गुलामी से आजादा हुए थे, वहां कोई ताकतवर लीडर डिक्टेटर बना बैठा है। अमरीकी लोकतंत्र ऐसे ही लीडरों से मामला करना पसन्द करती है। वह आसानी से खरीदे जा सकते हैं। मुहरा या आल–ए–कार बनाये जा सकते हैं। इस समय अमरीकी जमहूरियत ऐसीा खूना की प्यासी जमहूरियत बन गयी है जिस की भूख जंग से बुझती है। जिसकी प्यास इन्सानी खून से बुझती है।

हिन्दुस्तान की जमहूरियत का हाल अभी उतना बुरा नहीं लेकिन गिरावट के आसार यहां नजर आने लगे हैं। आन्ध्रा असेम्बली की गोल्डेन जुबली आयोजनों के सिलसिले में आयोजित एक सेमीनार को सम्बोधित करते हुए लोक सभा के स्पीकर सोमनाथ चटर्जी ने कई महत्वपूर्ण बातें कहीं, अगर माननीय सदस्यगण पहले से सोची समझी साजिश के तहत सदन की कार्यवाही में रूकावट डालते हैं तो लोकतंत्र का भविष्य अन्धकार में हैं। अगर चुने हुए सदस्य वोटरों की आशायें पूरी नहीं कर सकें तो वोटरों के पास उनको हटाने और वापस बुलाने का अख्तियार होना चाहिए। अगर ऐसा जो जाये तो जवाबदेही का खौफ चुने हुए प्रतिनिधियों को ठीक काम करने पर मजबूर करेगा। कानूनसाज इदारों में दौलत और ताकत के दबाव को कम करके ईमानदार और लायक व्यक्तियों के लिए गुंजाइशा पैदा करने

की जरूरत है। यह जरूरी है कि जनता के चुने हुए प्रतिनिधि स्वयं को नमूना या मिसाल बना कर पेश करें। अवाम सही समझते हैं कि कानून साज इदारों की कारगर्दगी का स्तर गिरा है। लोकतंत्र के अस्तित्व के लिए जरूरी है कि जमहूरी इदारों (लोकतान्त्रिक संस्थाओं) पर अवाम का विश्वास बहाल रहे।

अमरीका के राष्ट्रपति इब्राहम लिंकन ने लोकतंत्र की परिभाषा की थी, 'जनता की हुकूमत जनता के लिए और जनता के द्वारा। यह परिभाषा अमरीका के लिए भी है और हिन्दुस्तान के लिए भी। दोनों जगह इसकी शक्ल बदल गयी। अब लोकतंत्र का मतलब है, 'अमीरों की हुकूमत, अमीरों के लिए और अमीरों के जरिये'। इसी लिए लोकतंत्र का सूरज दोनों मुल्कों में ढल रहा है।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू दैनिक ६ दिसम्बर २००५ से साभार। प्रस्तुति एम० हसन अन्सारी)

(पृष्ठ ४ का शेष)

अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो फिर तो अल्लाह तुम से महब्बत करने लगेगा और तुम्हारे गुनाह मुआफ़ कर देगा वह तो ग़फ़ूर है रहीम है। (३:३१) फ़रमाया : "जिस ने रसूल की इताअ़त की उसने अल्लाह की इताअ़त की।" (४:८०) फ़रमाया : "वह तो अपने मन की चाहत से बात भी नहीं करते उनकी बात तो बस वही होती है।" (५३:३) अल्लाह ने आप के अख़्लाक ऊंचा कर के फ़रमाया : आप तो अअ़ला अख़लाक़ (उत्तम आचरण) वाले हैं।"(६८:४) अपने महबूब से फ़रमाया : "आप की ख़ातिर हम ने आप का ज़िक्र बुलन्द किया।" (९४:४) फ़रमाया : "हम ने तो आप को तमाम आ़लम के लिए रहमत बना कर भेजा है।" (२१:१०७) फ़रमाया : "बेशक अल्लाह और उसके फ़िरिश्ते नबी पर दुरूद भेजते रहते हैं यअ़नी अल्लाह आप पर रहमत उतारता रहता है और फ़िरिश्ते अल्लाह से आप पर रहमत उतारने की दरख़्वास्त करते रहते हैं। (हुक्म हुआ) : ऐ ईमान वालो तुम भी नबी पर दुरूद भेजा करो और खूब–खूब सलाम पहुंचाया करो।" (३३:५६) सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व अस्हाबिही व सल्लम तस्लीमन कसीरा। फ़रमाया : "आप को तो आप का रब इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएंगे।" (९३:५) "आप को हम ने कौसर अ़ता किया।" (१०८:१) आप को आप का रब एक रात मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़्सा ले गया।" (१७:१) फिर हदीसों में आता है कि मस्जिदे अक़्सा में आप को नबियों और रसूलों का इमाम बनाकर नमाज़ पढ़वाई फिर आप को बुराक़ सवारी के ज़रीअे हज़रत जिब्रील (अ०) के साथ आसमानों पर ले जाया गया, फिर उस मक़ाम तक पहुंचाया गया जहां हज़रत जिब्रील (अ०) भी न जा सके, आप के रब से बात चीत हुई। कुछ जहन्नमियों और कुछ जन्नतीयों का मंजर दिखाया गया उम्मत के लिये पांच वक़्त की नमाज़ का तुहफ़ा मिला। इस वाक़िअे को मिअ़राज कहते हैं, मिअ़राज का यह लम्बा सफ़र रात ही रात में पूरा हो गया, फ़ज्र से पहले आप अपने बिस्तर पर आ गये। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

अल्लाह तआ़ला ने आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) को बे शुमार (अनगिनत) मुअ़जिज़े अ़ता फरमाए, सब से बड़ा मुअ़जिज़ा तो क़ुर्आन मजीद का है कि उसकी एक आयत की तरह कोई आयत चैलंज के बावजूद दुन्या वाले न बना सके न बना सकेंगे। दूसरा बड़ा मुअ़जिज़ा यही मिअ़राज का है, जिस का ज़िक्र हुआ, तीसरा बड़ा मुअ़जिज़ा आप की उंगलियों के इशारे पर चान्द के दो टुकड़े हो जा कर फिर मिल जाना है, एक बड़ा मुअ़जिज़ा खजूर के खम्बे का आप की जुदाई में इन्सानों की तरह रोना है। आप के लुआ़बे दहन (थूक) की बरकत से हज़रत जाबिर रज़ि० के घर थोड़ासा खाना सैकड़ों ने पेट भर खाया। थोड़े से पानी में हाथ डाल दिया तो उससे हज़ार से ऊपर लोगों ने वज़ू किया और पिया, दरख़्त और पत्थर ने आप को इन्सानी ज़बान में सलाम किया, कंकरीयों ने कलमा पढ़ा, गोह ने अ़रबी ज़बान में आप के रसूल होनेकी गवाही दी, थोड़ी सी खजूरें आप की दुआ की बरकत से हज़रत अबू हुरैरा अपने तोशेदान से २५ साल तक ख़ूब खाते और लोगों को खिलाते रहे, एक प्याला दूध आप की दुआ की बरकत से भूखे अस्हाबे सुफ़्फ़ा के लिए काफ़ी हो गया आख़िर में उससे हज़रत अबू हुरैरा ने भी पेट भर कर दिया और सब से आख़िर में बचा हुआ आप सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने पिया।

कितना मज़बूत था उनका ईमान जिन्होंने यह मुअ़जिज़े अपनी आंखों से देखे और कितने सवाब के हक़दार हैं वह खुश नसीब जो बिन देखे इन मुअजिज़ों पर और ख़ातिमुल अंबिया की बताई गई सारी ग़ैब की बातों पर ईमान रखते हैं और आप से वालिहाना महब्बत रखते हुए आप की इताअ़त पर कमर बस्ता हैं। (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)

वह हैं ख़ैरुल बशर वह हैं ख़ैरुल अनाम
उन पे लाखों दुरूद उन पे लाखों सलाम

किस्त एक

निरन्तर विपत्तियों तथा मुसीबतों का आक्रमण

कारण और इलाज

शमसुल हक नदवी

इस चेतावनी के बाद भी हमारा हाल यह है कि सामने मस्जिद में जमाअत हो रही है और हम अपने घर में बैठ टेलीविजन देखते या रेडियो सुन रहे होते हैं। हदीस शरीफ में आता है कि किरात को इशा के बाद जल्द सो जाया करो ताकि सुबह सवेरे उठो और नमाज बढ़ो। इशा के बाद इधर उधर की बातों में न लगो। और हमारा यह हाल है कि रात देर तक टेलीविजन देखते देखते सो जाते हैं और सुबह दिन चढ़ते जागते हैं। सोते वक्त नमाज और दुआ का प्रबन्ध क्या करते गुनाह करते करते सोते हैं और गुनाहगार ही होकर उठते हैं कि नमाज की तौफीक (क्षमता) न मिलती। जब हमारा हाल अपने दयावान आक़ा के साथ यह होगा तो फिर आफतों और बलाओं का आना यकीनी है। कुछ कौमों पर सोते में अज़ाब आया कि रूजू (प्रत्यागमनों) और तौबा और सही मार्ग पर लौट आने का मौका न मिला। हमारे इस जमाने में अक्सर ऐसी घटनाएं पेश आती हैं मगर हम इससे सबक हासिल नहीं करते। अपना सुधार और खुदा की तरफ झुकने और सत्य के मार्ग पर लौट आने की चिन्ता नहीं करते। शायद मन में यह बात आए कि बहुत से सालेह (सचादारी) लोग भी तो इस का शिकार होते हैं ऐसा क्यों है। इसका जवाब आका (अल्लाह तआला) ने खुद फरमाया है–

अनुवाद – "इस फितने से डरो जो खास तौर पर उन्हीं लोगों पर वाकअ़ (घटित) न होगा जो तुम में गुनहगार हैं।"

सदाचारी लोग जालिमों का हाथ नहीं पकड़ते। उनके सुधार की चिन्ता नहीं करते। इसलिए वह गेहूं के साथ घुन की तरह पिस जाते हैं और एक जगह जमाने को गुजरे हुए इतिहास को सबूत के लिए इस तरफ फरमाया–

अनुवाद – "जमाना गवाह है कि इंसान नुक्सान में है मगर वह लोग जो ईमान लाए और नेक अमल करते रहे और आपस में हक़ (बात) की तलकीन (उपदेश) करते रहे और सब्र की ताकीद करते रहे।"

खुद नेक आज्ञापालक (मुतीअ) हों और समाज बिगड़ा हुआ हो, माहौल गन्दा हो। इसके सुधार की चिन्ता न करें। नेकी के प्रसार व प्रचार का फर्ज पूरा न करें हकीकी व सब्र की वसीयत के काम में न लगें तो आने वाली बलाओं और सजाओं से क्यों कर बच सकते हैं। हम जब घर से निकलते हैं तो अपनी सुन्दर कार पर भरोसा होता है। अपनी जेब में भरी हुई रकम और ज़ाहरी साधनों पर विश्वास होता है अतएव कई चिन्ता नहीं करते हालांकि रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फरमाया – जब घर से निकलो तो अपने आक़ा (अल्लाह) की पनाह व अमान (शरण) में देकर निकलो कहो– " अल्लाह के नाम से मैंने भरोसा किया अल्लाह पर और बहाली और कूवत नहीं है मगर अल्लाह के लिए।

फरमाया यह भी दुआ कर लो–

अनुवाद "ऐ अल्लाह हम तुम से इस सफर में नेकी व तक़वा (सन्यम) और तेरी खुशनूदी के काम चाहते हैं। ऐ अल्लाह ! हम पर यह सफर आसान कर दो और इसका फासला तय कर दे। ऐ अल्लाह! तू सफर में साथी और घरवालों का सहायक है। ऐ अल्लाह! मैं सफर की कठिनाइयों और अप्रिय दृश्य से और माल व बाल बच्चों में बुरी वापसी से और अच्छाई के बादा बुराई से और मजलूम (जिस पर अत्याचार किया गया हो) की बददुआ से तरी पनाह मांगता हूं।"

जब हम खुद को आका के हवाले करके और उसकी हिफाजत और सुरक्षा के तलबगार बन कर निकलेंगे तो वह हमारी रक्षा करेगा। हिफाजत के लिए मुकर्रर फरिश्ते हमारी देख भाल के लिए मौजूद रहेंगे। ऐसा न होगा तो किसी दुर्घटना का शिकार हो सकते हैं। या वापसी पर कोई भी रंजोगम की बात सुन सकते हैं।

और अगर यह भी न हो तो खैर व बर्कत से महरूमी (निराशा) रहेगी। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम किसी बस्ती में दाखिल हो तो इस तरह दुआ कर लिया करो ताकि वहां के शर व फितने से महफूज रहो–

अनुवाद – "ऐ अल्लाह! मैं तुझ

से इस बस्ती की भलाई और इसके अन्दर की भलाई मांगता हूं और तुम से इसकी और इस के अन्दर की बुराई से पनाह (शरण) मांगता हूं। ऐ अल्लाह ! हमारी वहां के रहने वालों के दिलों में महब्बत डाल दे और वहां के अच्छे रहने वालों की हम को महब्बत दे।

जिस नए मुल्क या शहर में इंसान दाखिल हो रहा है वहां बहुत सी आकर्षक और सुन्दर चीजें होंगी जो इस मुसाफिर को अपनी तरफ खींच सकती हैं। सच्चे दिल से इस दुआ के पढ़ने से उसकी हिफाजत होगी लेकिन हम ऐसा करते नहीं जिसके बुरे नतीजे व फल हमारे सामने आते हैं। बाहर जाकर आदमी बहुत से उन गुनाहों में लिप्त होता है जिनसे अपने प्रिय देश में समाज में बदनामी के डर से महफूज था आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मामूल (नित्यकार्य) था और अपने सहाबा को हिदायत फ़रमाते "पाक है वह ज़ात जिस ने (इस सवारी) को हमारे काबू में दिया और वह (अगर उसकी कुदरत न होती) हमारे कब्जे की न थी और हम अपने पालनहार की तरफ पलट कर जाने वाले हैं। सवारी चाहे जानवर हो या लोहे लकड़ी की हो उस को हमारे कब्जे में अल्लाह ही ने दिया है। उस के बिदकने या टूटने या टकराने या किसी गार .... और नदी में गिरने से हिफाजत भी उसी की तरफ से होती है। अतएव जब बन्दा दुआ करेगा तो सवारी को अल्लाह तआला किसी दुर्घटना का शिकार होने से बचाएगा।

रिवायत में आता है आप (सल्ल०) ने फरमाया कि आदमी जब घर में दाखिल हो तो कहे –

"ऐ अल्लाह! मैं आपसे (घर में) दाखिल और बाहर जाने की बेहतरी मांगता हूं हम अल्लाह के नाम पर दाखिल हुए और हम ने अल्लाह पर जो हमारा रब है भरोसा किया।"

''खैरल मूलिज'' में घर में सकुशल दाखिल और घर में खैर व बर्कत औलाद और बाल बच्चों की ख़ैर और खैर नेकी व आज्ञा पालन सुरक्षा कुशल मंगल सभी कुछ आता है मगर हम को इसका बहुत कम ध्यान रहता है जिसके नतीजे में बड़ी खैर (कुशल मंगल) से वंचित (महरूम) रहते हैं जो देखने में कम आती है और कभी किसी बड़ी दुर्घटना का शिकार हो जाते हैं जैसे, चोरी, डाका आदि या घर के माहौल में इंतिशर (अव्यवस्था) रहती है। (जारी)

मंज़ूम दुआ

हैदर अ़ली नदवी

या रब नहीं कहता मुझे जाहो जलाल दे।
हुब्बे रसूले पाक मगर दिल में डाल दे।।

तैबा को जाने के लिए मैं बेक़रार हूं।
अल्लाह मेरे तू कोई सूरत निकाल दे।।

नरग़े में दुश्मनों के है उम्मत फंसी हुई।
बिगड़े हुए हालात को मौला संभाल दे।।

रस्मो रवाज ग़ैरों के हम में हैं आ गए।
सांचे में सुन्नतों के तू अब हम को ढाल दे।।

किज़्बो फ़रेब और दग़ा जाल साज़ियां।
ये गन्दगी दिलों से हमारे निकाल दे।।

इज़्ज़त करें बड़ों की हम छोटों पे शफ़क़तें।
अख़्लाक़ ऐसे मुझको तू अब बे मिसाल दे।।

गो हूं गुनाहगार मैं बेहद मेरे ख़ुदा।
लेकिन मेरी दुआओं में तासीर डाल दे।।

हैदर की शबो रोज़ खुदा से है ये दुआ।
अपने करम से मौला तू रिज़्क़े हलाला दे।।

अतुकान्त नअ़त शरीफ़

मरयम कादरी अलीगढ़

हूरों ने कुछ कहा, कुछ कहा फिरिश्तों ने
जमीं ने मुस्कुराके कुछ कहा, और कहा कुछ फलक ने
हवा कुछ गुनगुना रही है, पहाड़ों से सदा आ रही है
हर फूल की महक फजा में बिखर गई है
हर मकां, हर गली रोशन हो गयी है
आस्मां से जमी तक चादर नूर की फैल गई है
सारे आलम से आ रही ये सदा है
मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा,
आमदे मुस्तफा, मरहबा, मरहबा

आमिना की गोद में खिला वो गुलाब
अरब के सहराओं में आया वो आफताब
नाजुक, नाजुक, हाथ उसके
गुलाब से नर्म होंठ उसके
मखमल से जियादा नर्म बदन उसका
जुल्फें हैं रात उसकी
हैं पलक घनेरीउसकी
रोशन चांद सा चेहरा उसका
मकाम खुदा के बाद आला उसका
बशर बन कर वो दुन्या में आया
मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
आमदे मुस्तफा मरहबा, मरहबा

कुदरत के हाथों का एक अजीम शाहकार है
पेशानी उसकी आफताब है
उसके हाथों की ठंडक बर्फ से जियादा है
उसके जिस्म की महक मुश्क से जियादा है
फिरिश्तों से बढ़कर मासूम चेहरा उसका
वो नुबूवत का चान्द मक्के में चमका
खुदा ने दिया हुस्न उस को कायनात का सारा
वो बन गया खुदा का महबूब खुदा का प्यारा
नाम मुहम्मद है उसका प्यारा-प्यारा
मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
आमदे मुस्तफा मरहबा, मरहबा

वो बेकरार दिलों का करार बन कर आया
वो इब्राहीम की दुआ बन कर आया
उसके जिस्म का साया कभी न जमी पर आया
अंगुली के इशारे से दो टुकड़े चान्द को कर दिखाया
शजर जिसके पास खुद चल कर आया
मेरे आका की सदाकत में कुरआन आया
है शान उसकी ऐसी शब भर में वो मेराज कर आया
है सखी वो ऐसा उस जैसा सखी न कोई आया
मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
आमदे मुस्तफा मरहबा मरहबा

उनकी सांसों से गुलाब की महक आती है
उनके गेसुओं से रात बन जाती है
उनके मुस्कुराने से गुलशन में बहार आती है
उनके छूने से मिट्टी भी सोना बन जाती है
आका के हुस्न के आगे चान्दनी भी शरमाती है
महबूब है वो रब का, ये हवा गुनगुनाती है
सुन मरयम अल्लाह भी यही फरमाता है
मेरी महब्बत मुहम्मद के इत्तिबाअ से मिलती है
मेरी याद उनके दिल में हर लम्हा रहती है
मरहबा, मरहबा, मरहबा, मरहबा
आमदे मुस्तफा मरहबा, मरहबा

दीनी ग़ैरत

डॉ० अब्दुल्लतीफ

ईमान कामिल के बाद जो वस्तु अत्यन्त जरूरी होती है और जिस की आज के दौर में बहुत आवश्यकता है और धर्म की रक्षा के लिए और दीन की कयामत तक बाकी रखने के लिए जिस वस्तु की विशेष आवश्यकता होती है वह है गैरत और हमीयते दीनी, धर्म सुरक्षा की तड़प।

सभी धर्मों का इतिहास बताता है कि जो चीज अत्यन्त आवश्यक है बल्कि शरीर में रीढ़ की हड्डी और जीव (रूह) का दरजा रखती है वह है धर्म की रक्षा की भावना है। यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, बुद्धधर्म तथा जैन धर्म, इन धर्मों में बदलाव इस लिए पैदा हो गया कि इन धर्मों को उनकी सुरक्षा करने वाले न मिले। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है इन तमाम धर्मों को इस्लाम की तरह अबू बकर जैसा खुद्दार और धर्म की सुरक्षा करने वाला कोई नाइब और जानशीना न मिला।

बात हजरत अबू बकर की आ गई तो मैं आपको बताता चलूं कि हजरत अबूबकर का जो अल्लाह से लगाव था या आप जो बीमारों और कमजारों की सहायता करते थे या जो आपका इन्साफ था और इसके अतिरिक्त जो गुण और खूबियां थीं वह अपनी जगह हैं लेकिन हजरत अबू बकर की जो सबसे बड़ी खूबी जिस की एक खलीफा और जानशीन को जरूरत होती है यानी दीन की हिफाजत का जज्बा और उसकी रक्षा के लिए अपने तन,मन,धन सबको लगा देना यह गुण हजरत अबू बकर में बहुत अधिक मात्रा में था। आप (सल्ल०) की वफात के बाद सहाबा ने आप (सल्ल०) का खलीफा हजरत अबू बकर को बनाया। खलीफा बनने के बाद आप ने जो काम किए वह बहुत महान हैं आपने उन लोगों से जिहाद किया जो जकात देने से इनकार कर रहे थे और उन लोगों से भी जिहाद किया जो दीन से फिर गए थे और जिन्होंने सन्देष्टा होने का झूटा दावा किया। और आपका वह कारनामा इतिहास के पन्नों पर सुनहरे शब्दों में लिखने योग्य है जो आपने जैशे–उसामा को रवाना करते हुए कहा था कि मदीने में अगर भेड़िए मेरी बेटियों को नोचे तो भी जिस लश्कर को आप (सल्ल०) रवाना करने का फैसला कर चुके थे। उसको मैं रोक नहीं सकता। और फरमाया क्या मेरे जीते जी दीन में कमी की जाएगी?

आज के वर्तमान युग में जिस तरह धर्म के साथ खिलवाड़ा किया जा रहा है जिस तरह से दीन से फिरना एक आम बात हो गई है या जिस तरह से दीन के अरकान यहां तक कि पूरे दीन का इनकार करते हुए भी लोग, मुसलमान होने का दावा करते हैं जरूरत है कि अबू बकर जैसा कोई पैदा हो जो दीन की हिफाजत करे और दीन से फिर जाने वालों से जिहाद करे।

जिस तरह से आज कुरआन के साथ मजाक किया जा रहा है जिस तरह से पूरी दुनिया में मुसलमानों को परेशान किया जा रहा है और जिस तरह रसूल (सल्ल०) का कार्टून छाप करके रसूल की तौहीन की जा रही है उसके दमन के लिए जरूरत है किसी अबू बकर की, जरूरत है किसी सलाहुद्दीन अय्यूबी की जरूरत है किसी महमूद गजनवी की, जरूरत है किसी मुहम्मद कासिम की।

इलाही ! भेज दे महमूद कोई !!!

तेरी रहमतों के साये

कविश रूदौलवी

कभी ऐसा भी दिन यारब ज़िन्दगी में आए
यह गुनहगार भी दयारे शहे अंबिया में जाए।
कभी मैं भी जा के देखूं वह तजल्लियों का मरकज़
जहां जा के बदनसीबों के नसीब जगमगाए।
तू हबीबे रब्बे अकबर तू है नाज़िशे रसूलां
जिसे हो ख़ुदा से उलफ़त तेरे दर से लौ लगाए
उसे ख़ौफ़े नारे दोज़ख़ न बिहिश्त का है लालच
जिसे मिल गये हैं आका तेरी रहमतों के साये।
यही आरज़ू है साक़ी मुझे ऐसी मै पिलादे
रहूं उम्र भर मैं बेख़ुद मुझे होश ही न आए
यह जहां का बाग़ सारा था ख़िज़ां की नज़्रे पैहम
आ गई बहार इस में जूं ही वह जहां में आए.
जो गुलामे मुस्तफ़ा है वह रहे कहीं भी कविश
सरे हश्र ढूंढ लेंगे तेरी रहमतों के साये

महब्बते रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

हैदर अली नदवी

भाइयो अल्लाह की सब से बड़ी और सबसे अजीम नेमत ईमान व इस्लाम की दौलत, और मुहम्मदे अरबी सल्ल० की गुलामी और आपका इत्तिबाअ है दोस्तो महब्बते रसूल वह अजीम नेमत है जिसके सामने संसार की सारी सरवत चेह है किसी शायर ने क्या खूब कहा है,

मुहम्मद की महब्बत दीने हक की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ ना मुकम्मल है
मुहम्मद के तरीके से कदम जो भी हटाएगा
कभी रस्ता न पाएगा कभी मंजिल न पाएगा।

मुहम्मद सल्ल० वास्ता हैं मअ़रिफते इलाही का मुहम्मद (सल्ल०) जरिया हैं रजाए खुदावन्दी का, हमें, तौहीद, नमाज, रोजा, हज, जकात, कुरआन गरज कि जो कुछ मिला वह सब आप के जरिये से मिला है और यह बात वाजिह है कि हमारी नमाजें हमारी रोजे हमारी जकात हमारा हज हमारे सदकात हमारे अकीदे हमारी तिलावत हमारे अख्लाक हमारी शादियां हमारी खुशी व गम की तकरीबात वगैरह बारगाहे रब्बुल आलमीन में उसी वक्त कुबूल होंगी जब ये नबी (सल्ल०) के तरीके पर होंगी। सुन्नत की मोहर के बिना हमारे आमाल अल्लाह के आली दरबार में कबूल न होंगे न उनकी कोई कीमत होगी लिहाजा हम को चाहिए कि हम नबी की सुन्नतों को हलका न समझें और सुन्नतों की पाबन्दी का इहतिमाम करें। रब्बे कायनात ने अपने महबूब (सल्ल०) से एलान करवा रहा है–कुल इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाह फत्तबिऊनी युहबिब कुमुल्लाहु (कुरआन) मेरे महबूब तुम दुन्या वालों को बता दो कि ऐ लोगो अगर तुम अल्लाह की महब्बत के दावेदार हो तो मेरी इत्तिबाअ करो। मेरा तरीका अपनाओ अल्लाह तुम से महब्बत करने लगेगा। मालूम हुआ कि नबी का इत्तिबाअ और नबी की महब्बत के बिना अल्लाह की रजा (खुशी) हासिल नहीं हो सकती –

की मुहम्मद से वफा तू ने तो हम तेरे हैं
ये जहां चीज है क्या लौहो कलम तेरे हैं

मेरे मुसलमान भाइयो प्यारे नबी की पैरवी सिर्फ नमाज रोजे पर नहीं खत्म हो जाती बल्कि पूरी जिन्दगी को नबी के तरीके पर लाने का मुतालबा है इरशादे रब्बानी है "व लकुम फी रसूलिल्लाहि उसवतुन हसनः (कुरआन) ऐ लोगो मैंने अपने महबूब के जीवन के एक एक क्रिया कलाप को तुम्हरे लिए आदर्श नमूना बना दिया है। अब यह नहीं चलेगा कि नमाज तो नबी के तरीके पर पढ़ें और शादियां यहूद व नसारा के तरीके पर हो अब ऐसा नहीं होगा कि रोजा, हज, जकात तो नबी के तरीके पर हो और रहन सहन खाना पीना कारोबार हुकूमत व सियासत, खुशी व गमी की महफिलों में अपनी वजअ़ कतअ़ और लिबास में अपनी मनमानी करें। यह सहीह नहीं है कि नबी से महब्बत का दावा भी है और शादियों की दावतों में बफर सिस्टम भी चलाएं अब ऐसा नहीं होना चाहिए कि बच्चों को कुरआन व हदीस की तालीम भी दे रहे है और हमारी माएं बहने नमाज रोजे की पाबन्दी भी कर रही हैं लेकिन बाजारों में बे पर्दा मेक अप करके सुन्नते नबी की धज्जियां उड़ा रही हैं और बालिग लड़कियां स्कर्ट और मिनी स्कर्ट और फिर खुदा जाने किस–किस स्कर्ट में अधनंगी घूमने को बुरा न जानें। ये आधा तीतर आधा बटेर वाला दीन हमें कामयाबीा से नहीं हम किनार कर सकता इससे अल्लाह की मददें नहीं आया करतीं। मस्जिद में तो हम मुसलमान और घरों में रसूल स० के बागियों का कल्चर ये कैसी मुसलमानी हैं हमारी ये रविश तो महब्बते रसूल से बगावत है, ये तो रसूल स० से गद्दारी व बे वफाई है। आज हम अपनी जिन्दगी का जायजा (समीक्षा) लें तो पता चलेगा हमारे घरों में नबी स० के तरीके के बजाए यहूदी व ईसाई कल्चर का राज है हमारे बच्चे टीवी देखते–देखते सो जाते हैं और जागने पर पहले टीवी खुलती है। क्या हमको और हमारे घर के बच्चों औरतों को पता है कि सोने का सुन्नत तरीका क्या है खाने पीने कपड़ा पहनने घर में आने जाने की दुआएं हमारे नबी ने क्या क्या बताई है क्या हमारे घर के बड़े बुजुर्गों ने कभी इस तरफ तवज्जो दी है कि बच्चों की तरबियत किस ढंग से करें ?

यहूदियत नसरानियत के बेहूदे और भोंडे तरीकों पर जिन्दगी गुजारने पर क्या नबी के दिल को ठेस नहीं पहुंचती है। अगर तुम साहिबे ईमान हो अगर तुम्हारे दिलों में नबी (स०) की महब्बत है और कौन मुसलमान है जिस के दिल में नबी की महब्बत नहीं तो हुजूर (स०) का फरमान सुनो तुम में से कोई आदमी उस वक्त तक मोमिने कामिल नहीं हो सकता जब तक मेरी लाई हुई शरीअत और मेरे तरीके के ताबेअ (अधीन) न हो जाए। ऐ मुसलमानों आओ अपने घरों की समीक्षा करें। क्या हमारे घरों में तिलावते कलाम पाक की जगह फिलमी शैतानों की आवाजें नहीं आती हैं क्या हमारी बच्चियां आधे कपड़े में सरे आम नहीं घूमती हैं क्या हमारे यहां बेपरदगी नहीं बढ़ती जा रही है क्या हमारी शादियां बेहूदा खुराफात फुजूल खर्चियों की शिकार नहीं हैं? क्या हमारे नौजवान दहेज की लानत का शिकार नहीं हो रहे हैं कितनी बच्चियां दहेज न होने के सबब बे शादी बैठी हैं? हमारे हाल पर किसी शायर ने यूं कहा है –

सुनकर अजान जानिबे मस्जिद न जा सका
क्या तेरे पास इतना भी ईमान नहीं है
चेहरा लिबास शक्ल में तू है बना यहूद
क्या अपनी तेरी कोई भी पहचान नहीं है

मेरे आका का इरशाद है "जब जमीन पर खुल्लम खुल्ला अय्याशी होने लगे बदकारी जिनाकारी आम हो जाए हर घर में नाच गाना होने लगे बुराइयों का पलड़ा भारी पड़ जाए जकात को तावान समझा जाने लगे सरकारी खजाने को जाती मिल्कियत समझा जाने लगे जब जिनाकारी आसान और निकाह दुश्वार हो जाए तो फिर अल्लाह का गजब नाजिल होता है फिर जमीन पर जलजले आते हैं, तूफानों की तबाही आती है सुर्ख आंधियां आती हैं। पस हम को खुदा से डरना चाहिए और उसके रसूल की पैरवी करना चाहिए।

(पृष्ठ २६ का शेष)

दुहरा देगा और यह बड़ी अच्छी अलामत होगी।

कभी आदमी आख़िर वक़्त में अल्लाह की तरफ मुतवज्जिह हो जाता है और किसी की बात का कोई जवाब नहीं देता लेकिन इस तवज्जुह को या वह खुद जानता है या उस का रब जानता है लिहाज़ा आख़िरी वक़्त की तल्क़ीन पर जाने वाले के मुंह से कल्मा न सुना जाए तो किसीा क़िस्म की बदगुमानी न की जाए और उसके लिए मग़्फ़िरत की दुआ की जाए।

गुलाब कागज़ी वह सब बना तो सकते है
मगर गुलाब की खुश्बू कहां से लाएंगे
वह हाथ जो कि बनाते हैं नंगी तस्वीरें
वह हाथ नूर की तस्वीर क्या बनाएंगे
अगर ख़याल हो उन हाथों को गुस्ताख़ी का
तब्बत यदा तो फिर वह हाथ भी कहलाएंगे

काविश

एअ़लान

मैं हारून रशीद सिद्दीक़ी हर उस व्यक्ति से क्षमा मांगता हूं जिसको मेरे द्वारा किसी भी प्रकार का कष्ट पहुंचा हो या मुझ पर उसका किसी प्रकार का हक़ हो।

(पृष्ठ २७ का शेष)

मौलाना सलमान हुसैनी ने नमाज़े जनाजा पढ़ाई और मगरिब बअद तक्ये पर। मौलाना मुहम्मद राबिअ हसनी नाजिम नदवतुल उलमा ने नमाज़े जनाजा पढ़ाई।

मौलवी मुहम्मद इसहाक मरहूम मौलाना सय्यिद मुहम्मद ताहिर हुसैनी मन्सूर पूरी साबिक मददगारे नाजिम नदवतुल उलमा के बेटे थे, उनकी मां मौलाना अली मियां के बड़े भाई डाक्टर अब्दुल अली की बेटी थीं, सय्यिद सलमान हुसैनी और सय्यिद सुहैब हुसैनी उनके भाई हैं, मौलाना मुहम्मद राबिअ हसनी और मौलाना मुहम्मद वाजिह हसनी दोनों उनके सगे खालू हैं, सय्यिद अब्दुल्लाह हसनी उनके सगे मामूंजाद भाई हैं। अल्लाह की मस्लहत कोई औलाद न थी, मुजस्सम गम उन की अहलिया को अल्लाह तआला सब्रे जमील अता फरमाए। सच्चा राही पढ़ने वालों से उनके लिये मगफिरत की दुआ की दरख़्वास्त है।

(पृष्ठ २६ का शेष)

मुसलमानों को यह वास्तविकता भी सामने रखना चाहिए कि समस्त पश्चिमी जन इस्लाम और मुसलमानों के विरोध में नहीं हैं उनके अधिकांश लोग इस्लाम और इस्लाम के सन्देष्टा (पैगम्बर) का सम्मान करते हैं। यह तो केवल राजनीतिज्ञों तथा कुछ शासकों और मीडिया के कुछ लोग हैं जो दृष्टता फैला रहे हैं। सब ऐसे नहीं हैं, जिस का वर्तमान प्रमाण यह है कि डिन्मार्क के सम्पादक के तीन वर्ष पूर्व के व्यवहार का रिकार्ड एक पश्चिमी पत्रकार ही ने ज्ञात किया है और उसी ने दोहरे मापदण्ड का प्रश्न उठाया है। (सेह रोजा दअवत देहली के शुक्रिये के साथ)

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : हमारे हिन्दोस्तान में हिन्दू लोग मन्दिरों में शंख बजाते हैं उसकी आवाज हमारे कानों में आती है, इसके लिए इस्लाम में क्या हुक्म है?

उत्तर : जो आवाज खुद से आप के कानों में आए उसमें आप पर कोई गुनाह नहीं। म्यूजिक वगैरह जो इरादा कर के सुनी जाए उसमें बड़ा गुनाह है। रास्ता चलते या घर बैठे किसी दूसरे घर की म्यूजिक की आवाज आ रही है और आप उसे ना पसन्द करते हैं तो आप की कोई पकड़ नहीं। शंख की भोंडी आवाज तो किसी को पसन्द भी नहीं आ सकती हिन्दू हजरात उसे अपने धर्म की चीज समझते हैं, इस लिए पसन्द करते है, हम मुसलमानों को उसके पसन्द करने का सुवाल ही नहीं हम इसके मुकल्लफ नहीं कि शंख की आवाज को अपने कानों में न आने दें। हम गुनहगार उस वक्त होंगे जब हम भी उसको बा बरकत आवाज समझेंगे और इसी नीयत से उसकी तरफ कान लगाएंगे।

प्रश्न : सुअर क्या हमेशा नापाक रहता है? जिस बुरूश से हमारे घर की पुताई होती है वह बुरूश भी तो सुअर के बालों से बनाया जाता है तो फिर क्या हमारे घर और हमारी मस्जिदें नापाक हैं ?

उत्तर : सुअर हमेशा नापाक रहता है। सुअर नजसुल अैन है, यअनी उसकी हर चीज नापाक है। उसकी हर हर चीज़ से बचना एक मुसलमान के लिए ज़रूरी है। वैसे कोई सूखी नजासत सूखे जिस्म या कपड़े से छू जाए तो जिस्म या कपड़ा नापाक न होंगे। अलबत्ता जिस गीली चीज़ में सुअर का सूखा बाल पड़ेगा तो बाल निकाल लेने पर भी वह गीली चीज़ नापाक हो जाएगी लेकिन बलव–ए–आम के सबब सुअर के बाल के बुरूश से रंगी या पोती दीवार नापाक न होगी। रंगाई पुताई जाइज़ होगी लेकिन फिर भी उस से बचने की कोशिश करनी चाहिये।

प्रश्न : कुछ जगहों पर फलेश टुवाइलेट की जगह कमोड टुवाइलेट हो गये हैं क्या उनमें खड़े होकर पेशाब करना फिर बैठ कर इस्तिन्जा करना दुरुस्त है?

उत्तर : अगर बैठ कर पेशाब करनेकी जगह न मिले तो खड़े होकर पेशाब करना जाइज होगा फिर जगह मिलने पर बैठ कर पाकी हासिल करना दुरुस्त होगा। हवाई जहाज में भी इस तरह की मजबूरी आती है। ऐसे मौकओं पर आदमी अपनी समझ से काम लेकर जिस तरह मुम्किन हो इस्तिन्जे से फरागत हासिल कर के पाकी हासिल करे। पाखाना पेशाब से फरागत तो जरूरी है चाहे वक्ती तौर पर नजिस ही रहना पड़े फिर मौकअ मिलते ही पाकी हासिल करे।

प्रश्न : कहा जाता है कि आख़िर वक़्त मुसलमान के मुख से कल्मा निकलना चाहिए इसके लिए आख़िर वक़्त में कल्मे की तल्क़ीन की जाती है लेकिन देखा गया है कि मरीज़ की हालत जब बिगड़ जाती है तो वह कल्मा अदा नहीं कर पाता इस सिलसिले के अहकाम से वाक़िफ़ कराइये।

प्रश्न : बेशक आख़िर वक़्त में इन्सान के मुख से लाइलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स०) अदा होना बड़ी अच्छी बात है, और जिस मुख से आख़िर वक़्त कल्म–ए–तय्यिबा या कल्म–ए–शहादत अदा हो जाए, उसका ईमान पर ख़ामिमा यक़ीनी समझा जाएगा। लेकिन जिस शख़्स ने पूरी ज़िन्दगी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के तरीक़े पर गुज़ारी यअनी शरीअत का पाबन्द रहा और आख़िर वक़्त बीमारी की तक्लीफ़ों या बेहोशी के सबब कल्मा न अदा कर सका तो उसका ख़ातिमा भी बिल्ख़ैर ही समझना चाहिए।

आख़िर वक़्त कल्मे की तल्क़ीन इस तरह हो कि उस के पास बैठ कर दर्द भरी हल्की आवाज़ से कल्म–ए–तय्यिबा और कल्म–ए–शहादत पढ़ें अब अगर वह सुन कर कल्मा अदा कर दे तो बहुत अच्छी बात है, न अदा करे तो कोई हरज नहीं कि जब वह अपनी ज़िन्दगी में मुसलमान रहा तो अब उसका ख़ातिमा भी इस्लाम पर समझा जाएगा। अगर मुसलमान अपनी ज़िन्दगी में यह आदत डाल ले कि कल्मे की आवाज़ सुनते ही कल्मा दुहरा दे तो बहुत उम्मीद है कि जब आख़िर वक़्त उस के पास कोई कल्मा पढ़ेगा तो वह भी अपनी आदत के मुताबिक कल्मा

(शेष पृष्ठ २५ पर)

मौलवी मुहम्मद इसहाक़ हुसैनी

अल्लाह की रहमत के साये में

डॉ० हारून रशीदा सिद्दीकी

उर्फ़ आम में मौलवी अपने से छोटों के लिए और मौलाना बड़ों के लिए लिखते बोलते हैं, अगर्चि मअ़ना के लिहाज़ से मौलवी की निस्बत वाहिद की तरफ़ और मौलाना की निस्बत जमअ़ की तरफ़ है, मुज़ाफ़ दोनों में मौला है। मौलवी इसहाक़ जिस वक्त मेरी शागिर्दी में आए छोटे थे लेकिन यहां छोटाई बड़ाई का तसव्वुर नहीं वह अपने इल्म, अमल और ख़ातिमा बिल ख़ैर के लिहाज़ से मुझ से कहीं बड़े हो गये। यहां लफ़्ज़ मौलवी में उन से अपनाइयत और मौलाना में अजनबीयत लग रही है इसलिए मैं उनको मौलवी लिख रहा हूं।

मौलवी मुहम्मद इसहाक़ मअ़हद में मेरे कई साल शागिर्द रहे। वह शुरूअ़ ही से बड़े नेक थे, कभी भी किसी से उनकी कोई शिकायत सुनने में न आई, आम तौर से अअ़ला तअ़लीम हासिल करने वाले इब्तिदाई तअ़लीम के असातिज़ा को नज़र अन्दाज़ कर देते हैं उनमें यह ऐब नहीं था, सभी असातिज़ा का पूरा लिहाज़ करते। मुझे आमतौर से कोई मास्टर और कोई डाक्टर से मुख़ातब करता है, वह मुझे मौलाना कहते थे और बड़ी महब्बत का इज़हार करते, वह मेरे घर (दीहात) भी जा चुके हैं और मेरी अ़दम मौजूदगी में मेरी एक भांजी का निकाह़ पढ़ाया और तक़रीर की।

इस साल उन्होंने हज्ज किया था, हज्ज पर रवानगी से पहले नदवे के लोगों से मिलने आए तो मुझ से भी मिले और बड़ी गर्म जोशी का मुआ़नक़ा किया मुझे क्या मअ़लूम था कि यह उनका आख़िरी सलाम और आख़िरी मुआ़नका है। हज्ज से वापसी पर अभी मुझ से मुलाक़ात न हुई थी उनकी वफ़ात की रात मैं एक जरूरत से देहली जा रहा था। मैं ने अपने मोबाइल का स्विच आफ़ कर रखा था, सुब्ह़ सादिक़ के वक्त स्विच आन किया तो पहले उनके एक अ़ज़ीज़ हाफ़िज़ सय्यिद मुहम्मद राफ़िअ़ फिर मौलवी बरकतुल्लाह ने मुझे हादिसे की ख़बर दी इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन पढ़ी और थोड़ी देर सकते में रहा, मेरा ग़म दोहरा था एक तो अपने अ़ज़ीज तरीन की जुदाई का दूसरे उनके जनाज़े में अ़दमे शिरकत का। देहली में अपने लड़के मतलूब अहमद नदवी की हज्ज से वापसी पर उनको लेने गया था उनकी आमद सनीचर को थी और भी बअ़ज़ वुजूह से मैं जुमअ़े को लखनऊ नहीं आ सकता था इसलिए बड़ा ग़म हुआ उसी ग़म की कैफ़ीयत में मैंने पूरा दिन तिलावत में गुज़ारा।

मअ़लूम हुआ कि मरहूम ने जुमिअरात की शाम को अहाते-ए-शौकत-अली में शुहदाए इस्लाम पर मुहाज़िरा दिया, घर वापस आए तबीअ़त बिगड़ी और किसी तिब्बी इम्दाद से पहले अपने रब के दरबार में हाजिर हो गये अल्लाह तआ़ला अपने इनआमात से नवाजे आमीन। अब आप चाहे इसको कल्बी दौरा कहें या इलाही बुलावा बहर हाल वह हम से ओझल हो गये। मौलवी मुहम्मद इसहाक का सने पैदाइश १६५८ है, उनकी तअलीम शुरूअ से आखिर तक नदवे में हुई, उसके मक्तब उसके मअहद फिर दरजाते आलिया, उन्होंने सन् १६८५ में फरागत हासिल की थी। जल्द ही वह मदरसा आलिया इरफानिया में मुदर्रिस हो गये और आखिर तक वहां से मुन्सलिक रहे, वह मदरसा मजहरूल इस्लाम बिल्लौच पूरा के जिम्मेदार, मदरसा मुईनुलइस्लाम दरयाबाद के नाजिम, अन्जुमन तअलीमात दीन लखनऊ के जनरल सिक्रेटर, अन्जुमन तअलीमाते दीन रायबरेली के सद्र थे, जामिआ सय्यिद अहमद शहीद के अमीनुल आम थे, वह तहरीक पयामे इन्सानियत (मानवता का सन्देश) के जनरल सेक्रेट्री थे। वह बड़े अच्छे मुदर्रिस बड़े अच्छे मुकर्रिर, बड़े अच्छे मुन्तजिम थे, आप अन्दाजा लगायें कि किन किन खिदमात से उन्होंने आखिरत का जखीरा जमअ किया ६,१० फरवरी २००६ (१०,११ मुहर्रम १४२७) जुमअे की रात को रेहलत फरमाई और जुमअे की शाम को बअद मगरिब तक्या रायबरेली के सादात के कबरिस्तान में तदफीन अमल में आई। जुमअे की नमाज के बअद नदवे में

(शेष पृष्ठ २५ पर)

मुसलमान हर क्षेत्र में पिछड़ेपन का शिकार

हबीबुल्लाह आजमी

जस्टिस सच्चर कमेटी के छः प्रान्तों के एक सर्वे में यह बात उभर कर सामने आई है कि सरकारी और प्राइवेट सेक्टर में मुसलमानों की नुमाइन्दगी बहुम कम है। मुसलमानों के पास जमीनों की बहुत कमी है। उनके पास उन संसाधनों की भी बहुत कमी है जिन की मदद से वह तालीम की योजना को चला सकें तथा सेहत की सुविधाओं से फायदा उठा सकें मुस्लिम बाहुल क्षेत्रों में स्कूलों और बुनियादी तालीम सुविधाओं का इंतिजाम कर सकें। सर्वे के अनुसार देहाती क्षेत्रों में ५०.१ फीसदी और शहरों में ३६.१ फीसदी मुसलमानों को सूचनाएं ज़ाती मुलाकातों से प्राप्त होती हैं। नगरों के सर्वे के अनुसार ४२.६ फीसद मुसलमान टीवी द्वारा १८ फीसदी रेडियो के द्वारा सूचनाएं प्राप्त करते हैं जबकि देहाती क्षेत्रों में यह अनुपात १३.२ और २० फीसद है। गांव में केवल ६ प्रतिशत और शहरों में २०.२ प्रतिशत मुसलमान अखबार पढ़ते हैं। गुजरात, राजस्थान, देहली, मध्यप्रदेश, बिहार और उत्तर प्रदेश के देहाती क्षेत्रों में केवल १५.१ प्रतिशत मुस्लिम घरानों को गरीबी रेखा से नीचे मुफत अनाज स्कीम में अनाज मिलता है। केवल २.३ प्रतिशत मुसलमानों को सब्सिडी वाले कर्ज मिलते हैं। इसके अतरिक्त केवल ३ फीसदी मुसलमानों को सब्सिडी बिजली दी जाती है। मुसलमान केवल ८.३ फीसदी इन्द्रा गांधी रोजगार योजना से लाभ उठा पाते हैं और केवल०.३ प्रतिशत ग्रुप हाउसिंग स्कीम के सदस्य बन पाते हैं। देहाती क्षेत्रों के सर्वेक्षण से यह भी पता चला है कि ६०.२ प्रतिशत मुसलमानों के पास जमीन नहीं है। केवल २.१ के पास ट्रैक्टर हैं और केवल एक प्रतिशत के पास हैन्ड पम्प सेट हैं।

जहां तक तालीम का प्रश्न है शहरों में ५४.६ प्रतिशत मुसलमान और गांवों में ६०.२ प्रतिशत मुसलमान स्कूलों में नहीं गए। गांवों में केवल ०.८ प्रतिशत मुसलमानों ग्रेज्युेट हैं शहरों में ४० प्रतिशत मुसलमान जनरल तालीम हासिल करते हैं और इनमें से केवल ३.१ प्रतिशत ग्रेच्यूट हैं, १.२ प्रतिशत पोस्ट ग्रेच्यूट हैं। इस सर्वे के अनुसार सरकारी और प्राइवेट सेक्टर की नौकरियों में मुसलमानों की नुामइन्दगीा बहुत कम है। शहरों में केवल ३ प्रतिशत मुसलमान सरकारी मुलाजिम हैं जबकि प्राइवेट सेक्टर में ३–५ प्रतिशत मुसलमाना मुलाजिम हैं। लगभग २३.५ प्रतिशत मुसलमान घरेलू काम काज करते हैं। लगभग १७ प्रतिशत पार्ट–टाइम मजदूर हैं, १४.२ ट्रेंड मजदूर हैं और सात प्रतिशत छोटे और मामूली व्यापारी हैं। शहरों में ५७ प्रतिशत मुसलमान उर्दू को अपनी मात्र भाषा कहते हैं जबकि ३८ प्रतिशत मुसलमान हिन्दी को मात्र भाशा बताते हैं। मुसलमानों की एक बड़ी संख्या अपने बचौं को अंग्रेजी मीडिया स्कूलों में भेजना चाहती है लेकिन उन का कहना है कि वह इंगलिश मीडियम स्कूलों का खर्च बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं।

यह तस्वीर है आजाद भारत में मुसलमानों की। देश का अगर २० करोड़ मुसलमान पिछड़ जाता है तो समाज सेवकों, राजनीतिज्ञों के लिए बहुत चिन्ता की बात है, क्योंकि इतनी बड़ी संख्या में पिछड़ने वाले वर्ग का दुशप्रभाव देश की उन्नति पर जरूर पड़ेगा और हमारा देश बावजूद उन्नति के पथ पर अग्रसर होने के अन्य देशों से पिछड़ जाएगा। इसकी मिसाल ऐसी ही है कि अगर पैदल चलने वालों की एक भीड़ हो जाएगी तो कारनशीनों कों भी अपनी रफतार कम करना पड़ेगी। देश के उन्नति के आंकड़े भले भी ऊपर चढ़ते जाएं परन्तु इसका लाभ केवल चन्द्र पूंजीपतियों और मेधावी (जहीन) छात्रों तक ही सीमित होकर रह जाएगा। गरीब जनता और गरीब होती जाएगी और किसानों तथा छोटे कारोबार करने की आत्महत्याओं (खुदकशी) का ग्राफ ऊपर चढ़ता ही जायेगा।

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

पश्चिम का दोहरा मापदण्ड

(सम्पादक)

डिन्मार्क तीन वर्ष पूर्व

यह बात अप्रैल २००३ की है अर्थात तीन वर्ष पूर्व की। डिन्मार्क के एंक आर्टिस्ट क्रिस्टोफर जीलर (Christoffer Zieler) ने माननीय ईसा मसीह के चित्रों पर आधारित कारटूनों की एक श्रृंखला डिन्मार्क के समाचार पत्र जाइलांडस पोस्टेन (Jylands-Posten) को प्रकाशना हेतु भेजा। समाचार पत्र के सम्पादक जेन्स कैसर (Jens Kaiser) ने यह कह कर मुद्रण से नकार दिया कि इस से ईसाई समुदाय की भावनाएं आहत होगी और इस पर बड़ा कोलाहल होगा। मसीही जगत प्रदर्शन करेगा। कारटून रचयिता का कहना था कि उस ने यह कारटून बुहत सोच समझ कर बनाए थे और अपने ईसाई दादा को दिखाए भी थे वह उनको देखकर आनन्दित हुए थे, परन्तु सम्पादक कारटून प्रकाशित न करने के अपने निर्णय पर अड़ा रहा। और अब वही समाचार पत्र जाइलान्डस पोस्टेन है। जिस ने इस्लाम के अन्तिम सन्देष्टा के चित्रों पर आधारित एक नहीं बारह कारटून छाप डाले, उसका सम्पादक भी वही जेन्स कैसर है जो विवादस्पद कारटूनों के प्रकाशन को पूरी शक्ति से उचित बता रहा है। तीन वर्ष पहले नकारने का रिकार्ड लन्दन के समाचार पत्र गार्जियन की इन्टर नेट सर्विस के समाचार दाता गालाडीस फाउच (Gwladys Fouch) ने ६ फरवरी को निकाला और प्रश्न उठाया है कि क्या यह दोहरा मापदण्ड नहीं है? जेन्स कैसर ने उस का जो उत्तर दिया है वह भी पढ़ने योग्य है, कहता है "इस्लाम के सन्देष्टा (स०) के कारटूनिस्ट से खुद हम ने मांग की थी कि वह यह कारटून बनाए जब कि आदर्णीय ईसा (अलैहिस्सलाम) के कारटूनों के लिए ऐसी कोई मांग नहीं की गई थी, आर्टिस्ट ने स्वयं बनाकर भेजे थे।"

पत्रिकारिता का घटयापन समिति नहीं

कभी कभी हम को भारतीय पत्रकारिता के घटयापन पर रोना आता है परन्तु कम से कम वैदेशिक कार्यों में पश्चिम पत्रकारिता यहां से भी अधिक घटिया है। डिन्मार्क के सम्पादक का यह कार्य क्या खुली धान्धली नहीं है? क्या गर्जियन के संवाददाता के प्रश्न का उत्तर देते हुए उसने कुछ भी सोचा कि यह उत्तर कितना हास्यप्रद है, लोग कितनी हंसी उड़ाएंगे और पूंछेंगे कि उसने इस्लाम के सन्देष्टा के कारटूनों की क्यों मांग की, और हजरत ईसा के कारटूनों की मांग क्यों न की? वैसे एक दृष्टि से सम्पादक का उत्तर उल्लेखनीय है। उसे यही उत्तर देना चाहिए था कारण यह कि इस का कोई उचित उत्तर हो भी नहीं सकता था। वास्तव में डिन्मार्क के कारटूनों जैसी घटनाएं विचार अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पश्चिमी सूरमाओं को नंगा कर देती हैं। यह बात समाचार पत्रों और उनके सम्पादकों तक सीमित नहीं है, उनके राजनीतिज्ञों की भी सही दशा है, यहां तक कि शासकों के ओछेपनकी भी यही दशा है। इटली का मंत्री काल्ड्रोली एक शासक ही तो है जो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कारटूनों की टी शर्टें बान्टने की योजना रखता है, फिर कुछ पश्चिमी देशों के शासकों और राजनीतिज्ञों ने इस विवाद में जो प्रणाली अपनाई है उससे भी उनकी घटया सोच के अतिरिक्त किसी अन्य वस्तु का पता नहीं लगता।

विवाद की एक विशेष दिशा

वैसे इस पूरे विवाद की एक विशेष दिशा भी है जिसे अनदेखी नहीं कर सकते और वह दिशा मुसलमानों के लिए संतोष जनक है, वह यह कि इस्लामी विश्वासों का सामना करने के लिए पश्चिमी विचार धारा वालों के पास कुछ नहीं है, इसी कारण वह इन घटिया विधियों पर उतर आए हैं। अगर वह इस्लाम की नैतिक शक्ति से भयभीत हैं तो उन्हें इस का सामना वैज्ञानिक रूप से शिष्टता के साथ करना चाहिए परन्तु यदि वह इस्लाम से भयभीत नहीं हैं और इस्लामी नैतिक शक्ति को नहीं स्वीकारते तो फिर उन्हें इन हथकन्डों को अपनाने की कोई आवश्यकता नहीं उन की वर्तमान प्रणाली स्पष्ट करती है कि इस्लाम और उम्मते इस्लाम से सम्बन्धित कोई ऐसी वस्तु है। जिससे वह डर और कांप रहे हैं, परन्तु उचित विधि से उस का सामना नहीं कर सकते। यहां

(शेष पृष्ठ २५ पर)

देश को घुन की तरह खाने वाली बीमारियाँ

"जो लोग इस देश की जरूरतों पर गहरी नजर रखते हैं, और वे भावुकता के गुलाम नहीं हैं, वह मुझ से सहमत होंगे कि इस समय देश की सबसे बड़ी जरूरत उस अखलाकी एहसास की बेदारी को इन बेउनवानियों, जियादतियों, नाइन्साफियों, तंग नजरी, भाई–भतीजावाद, नाजाइज तरफदारीा के नीचे स्तर से ऊपर उठाये। व्यापारियों व कर्मचारियों को हद से बढ़ी हुई नफाखोरी, रिश्वतसतानी और चोर बाजारी से बचाये रखे,और इस तरह देश को उस आम खराबी, अव्यवस्था, बेरोजगारी, होश उड़ा देने वाली महंगाई और सूखा से बचा ले, जिस का करीबी खतरा सर पर खेल रहा है और जिसकी मौजूदगी में आजादी की जन्नत मुसीबतों और परेशानियों की जहन्नम बन जाती है। शायद किसी को इस हकीकत से इन्कार न होगा कि हमारी तमाम ज्ञानमयी, साहित्यिक, कलचरल और भाषायी जरूरतों पर अखलाकी जरूरत भारी है। मान लीजिए इस देश का एक ही कलचर, एक ही सभ्यता और एक ही भाषा हो गयी लेकिन उन बद अख्लाकियों का खात्मा न हुआ जिन की वजह से जिन्दगी मुश्किल हो रही है तो क्या इस से देश की असल जरूरत पूरी हो जायेगी और इन बदअखलाकियों और बदउनवानियों पर पर्दा पड़ जायेगा। अगर दुनिया के असामाजिक तत्व और बदअखलाक इन्सान जिन का अखलाक पस्त और एक ही कलचर और एक ही जबान अख्तियार कर लें तो दुनिया की कोई अदालत उन का गुनाह माफ कर देगी। क्या अगर दुनिया के तमाम डाकू एक ही वर्दी पहन लें और एक ही बोली बोलने लगें तो यह कोई खुशी और इतमीनान की बात होगी। इसलिए एक समझदार इन्सान से यह आशा की जानी चाहिए कि वह इन बीमारियों की तरफ ध्यान देगा जो हमारे देश को घुन की तरह खा रही हैं, और इसकी बुनियादों को खोखला कर रही है। (अली मियां)

मुसलमानों के बाईकाट से डैनमार्क की मईशत को भीरी नुक्सान

अरब मुल्कों में डेनिश चीजों का मुकम्मल बाईकाट, मुसलमानों ने भी बाईकाट शुरू कर दिया

रियाज, दुबई, लंदन (अलअहरार टीम) डैनमार्क के अखबार जैलंडर पोस्टन की तरफ से मुहसिने इन्सानियत रसूल अकरम (स.) की शान में गुस्ताखी के खिलाफ रोष का सिलसिला अरब मुल्कों से शुरू होकर अब पूरी दुनिया में फैल गया है, मुत्तहिदा अरब इमारात के वजीरे आजम ने हुक्म नामा जारी कर के डैनमार्क से कोई चीज खरीदारी ना करने और मुल्क में मौजूदा डैनमार्क की चीजों को बाजार से उठा लेने का हुक्म दिया है डेनमार्क की चीजों के बाईकाट की इस मुहिम ने फिर तो जोर पकड़ लिया और देखते ही देखते तमाम अरब मुल्कों से डैनिश चीजों के आर्डर कौंसिल हो गये, बल्कि मुसलमानों ने डैनिश चीजों का मुकम्मल बाईकाट कर दिया है, सऊदी अरब से प्राप्त जानकारीा के मुताबिक जनरल स्टोरस पर डैनिश चीजों के रेक खाली नजर आ रहे हैं याद रहे कि सिर्फ सऊदी अरब में ही सालाना ३५ अरब यूरो की डेरी चीज डैनमार्क की फरोख्त होती थी। डैनमार्क के कारोबारी माहिरन का कहना है कि अगर यह बाईकाट छः माह तक जारी रही तो डैनमार्क को ३७ अरब यूरो का भारी नुकसान होगा जिस से डेनमार्क की कारोबारी हालत कमजोर हो जायेगी, लंदन से प्राप्त हुई जानकारी के मुताबिक यूरोप के मुसलमानों में भी डैनिश चीजों की खरीद में कमी के इशारे वाजेह तौर पर महसूस किये गये हैं, डैनमार्क के अखबार की इस नापाक हरकत के मद्दे नजर सऊदी अरब समेत कई इस्लामी मुल्कों ने डैनमार्क से अपनी सफारती तअल्लुक खत्म कर लिये हैं।

काबिले जिक्र है कि डैनमार्क और अन्य यूरोपी अखबारात की तरफ से यह नापाक हिम्मत करने के बाद पूरी अकवाम पर यह बात रोज रोशन की तरह अयां हो गई है कि दुनिया भर के मुसलमान चाहे वह कितने ही टुकड़ों में बटे क्यों न हों, आज भी फरजंदाने इस्लाम में अपने आका हजरत मुहम्मद साहब (स०) की जाते बाबरकत के लिए वही महब्बत का जज्बा और इश्क मौजूद है, जो कुरूने ऊला के दौर में था, आज भी फरजनदाने इस्लाम अपने आका (स०) के नामूस की हिफाजत के लिए किसी किस्म की कुर्बानी देने से गुरेज नहीं करते औरा न ही करेंगें। (अल अहरार लुधियाना के शुक्रिये के साथ)

कमलादास से कमला सुरय्या तक

केरल की एक नोबुल पुरस्कार पानेवाली नौमुस्लिम साहित्यकार से लिया गया एक इंटरव्यू

मु० रियाज़

पिछले रमजान १४२० हि० में देश के सारे मुसलमानों में एक खुशी की लहर दौड़ गई जब संसार की एक मशहूर साहित्यकार और अंग्रेजी भाषा की एक मशहूर कवियित्री (शाएरा) कमलादास ने अपने कुबूले इस्लाम का एलान किया। "कमला" उनका असल न्राम है और दास उनके पति के नाम का अंश है। कमला जिसको उर्दू में कंवल कह जाता है बी.जे.पी. का चुनावी निशा है। कमला का इस्लाम स्वीकार करना वास्तव में एक शुभ भविष्यवाणी है और इस कंवल के अन्दर एक प्रकार की इन्क्लाबी संभावना की तरफ एक स्पष्ट संकेत है। रमजान महीने में उमरः के बाद सब से पहली दुआ मैंने सुरय्या के इस्लाम पर कायम रहने के लिए की। वह अपनी ज़ात के अन्दर तनहा एक फर्द (व्यक्ति) नहीं बल्कि एक अंजुमन हैं। उनका इस्लाम स्वीकार करना एक भारी संख्या में इस्लाम स्वीकार करने का संकेत है।

डॉ० कमला सुरय्या इस्लाम स्वीकार करने से पहले अपनी जिन्दगी में एक मसरूफ़ महिला थीं। इस्लाम स्वीकार करने के बाद तो पूरी मुस्लिम कौम उमड़ उमड़ कर उन से मिलने के लिए आ रही थी। मुझे उन से मुलाक़ात करने में काफी कठिनाई पेश आई।

अन्ततः मोलवी मुहम्मद यूनुस उमरी की मददसे १८ अप्रैल मंगल के दिन दोपहर बाद उनसे मिलनेका समय तय पाया। जब मैं एरनाकूलम पहुंचा तो उन्हें इन्तेज़ार करते हुए पाया। चुनांचि मैंने उनसे निम्नलिखित प्रश्न पूछे।

प्रश्न : आप अपना संक्षेप परिचय दे दें।

उत्तर : मेरा नाम कमला था जबकि मलियालम में कहानियां लिखने लगी तो अपना कलमी नाम माध्वी कुट्टी रख लिया। अंग्रेजी शाएरी मैं ने कमलादास के नाम से किया। अब मेरा नाम कमला सुरय्या है। मैं सन् १९३२ में केरल के एक मशहूर नायर कुटुम्ब में पैदा हुई जिसका नाम नाला पाड़ है। मेरी मां बालामुन्नी अम्मा मशहूर कवित्री थीं और मेरे पति वी.एस.नायर मलयालम के एक दैनिक समाचार पत्र मातृभूमि के एडीटर थे। मेरे तीन लड़के हैं बड़ा लड़का हिन्दुस्तान का एक मशहूर पत्रकार है और दैनिक समाचार मातृभूमि और टाइम्स आफ इण्डिया का एडीटर रह चुका है। और इस समय भारत के विभिन्न विद्यालयों में विज़िटिंग प्रोफेसर है। दूसरा लड़का चेनिनदास पूरे दक्षिणी भारत में टाइम्स आफ इण्डिया का डायरेक्टर है। और आज कल बंगलौर मे रह रहा है। तीसरा लड़ा जयसूरिया टाइम्स आफ इण्डिया पूना का मैनेजर है। इसके अतिरिक्त मेरे पाले हुए दो मुस्लिम लड़के भी हैं। दोनों अन्धे थे। दोनों को मैंने अच्छी तरह तालीम दिलवाई है। उन में से एक का नाम प्रोफेसर इरशाद अहमद है। दूसरे को मैं ने लन्दन में तालीम दिलवाई। उनका नाम बैरिस्टर इम्तियाज़ अहमद है। यह सब अपनी छुट्टी में मेरे पास आ जाते हैं जबकि वह भारत कै विभिन्न क्षेत्रों में व्यस्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं मेरे पति माधौदास रिज़र्व बैंक के एक अफसर थे १९६२ में उनकी मृत्यु हो गई मगर यह एक सत्य है कि इस खुशहाल घर में भीड़ भाड़ और अदबी दुन्या के बहुत से लोगों से सम्बन्ध के बावजूद मैं हमेशा एक भयानक तनहाई के अज़ाब का अनुभव करती रही थी। अब मामला बिल्कुल उलटा है। रबेजुल जलाल की महब्बत से मेरी रूह को शान्ति और संतोष प्राप्त है।

प्रश्नः आप अपनी साहित्यिक सेवा के सम्बन्ध में कुछ सूचनाएं दीजिए जो पढ़ने वालों के लिए लाभदायक हों।

उत्तर : मैंने बचपन ही से लिखना शुरू किया था। १९५२ में मेरी यह पहली पुस्तक मलयालम में प्रकाशित हुई। १९६४ में अपने अंग्रेजी शेरों (पद्यों) को संग्रह पर मुझे ऐशियन पोएट्री अवार्ड (Asian Poetry Award) मिला। १९६५ में मेरी अपनी रचना पर प्रीकेन्ट अवार्ड मिला जो ऐशियाई देशों में लिखी हुई पुस्तकों पर दिया जाता है। मेरी

इस पुस्तक का नाम **Summer in Calcutta** था। इसी वर्ष आसान वर्ल्ड प्रेस अकेडमी अवार्ड भी मिला। १९६९ में केरल वाहित्य अवार्ड मिला। इसके अतिरिक्त अलसट्रेटेड वीक्ली की पोएट्री एडीटर, केरल चिलडरेंस फिल्म सोसाइटी के अध्यक्ष, केरल फारेस्ट चेयरमैंन अंग्रेजी पत्रिका पोएट की ओरियन्टल रीडर रह चुकी हूं। इसके अतिरिक्त मेरी एक रचना "मेरी कहानी" है। वह भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त पन्द्रह विदेशी भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। (डॉ० सुरय्या के अंग्रेजी कविताएं संसार की मशहूर यूनिवर्सिटियों के पाठ्यक्रम में दाखिल हैं। इस के अलावा पिछले साल नोबुल पुरस्कार के लिए जिनके नाम प्रस्तावित किए गए थे उन में वह भी शामिल थीं।

प्रश्न : इस्लाम से आप का सम्बन्ध किस जमाने में कायम हुआ।

उत्तर : इरशाद अहमद और इम्तियाज़ की परवरिश जब मैंने अपने जिम्मे ली तो इरादा किया कि इनकी इस्लामी तालीम का भी इन्तिजाम हो। लेकिन कोई काबिल आलिम नहीं मिल सका। मजबूरन मुझे खुद इस्लामी तालीम का अध्ययन करके उनको समझाना पड़ा। इस प्रकार मुझे इस्लाम की जानकारी प्राप्त हुई।

प्रश्नः इस्लाम की किस तालीम ने आप को प्रभावित किया?

उत्तर : पैग़म्बरे इस्लाम की पवित्र जीवनी ने मुझे बेहद प्रभावित किया। आप की ६२ वर्षी ज़िन्दगी कई मरहलों से गुजरी है। प्रारम्भ में आप एक हसीनो जमील (अति सुन्दर) मगर यतीम बच्चे थे। नबूवत मिली और आप एक बड़ी सलतनत के शासक बने मगर आप की जिन्दगी एक निर्धन और फक़ीर की जिन्दगी रही। आपने अपना जीवन स्तर नहीं बदला। यकीनन इस चीज ने मुझको बहुत प्रभावित किया।

प्रश्न : इस्लाम को स्वीकार करने की इच्छा आपके दिल में कब पैदा हुई?

उत्तर : १९७२में पहले पहल इस्लाम कुबूल करने की इच्छा पैदा हुई। उस समय मैंने अपने पति से अपनी ख्वाहिश जाहिरकी। वह एक भक्त हिन्दू थे। उन्होंने कहा कि बच्चों की शादी हो जाने दो फिर तुम इस्लाम स्वीकार कर लेना वर्ना हिन्दू और मुसलमान दोनों हम से नाराज हो जाएंगे। एक मां की हैसियत से मैंने अपने बच्चों के भविष्य की खातिर चुप हो गई। मैं किसी के लिए रूकावट या परेशानी का कारण नहीं बनना चाहती थी।

प्रश्न : ११ दिसम्बर १९९९ को कोचीन में केरल पुस्तकालय कौंसिल का उद्घाटन करने के लिए जाते हुए क्या आपने यह तय किया था किवहां इस्लाम कुबूल करने का एलान करेंगी?

उत्तर : नहीं, नहीं पहले से ऐसा कोई फैसला नहीं था। उद्घाटन के वाक्य मेरी जबान से अदा हो रहे थे तो मुझे यह महसूस हुआ कि जैसे एक नूर (प्रकाश) मुझ से करीब हुआ हो उसी क्षण मेरे दिल में अपने आप फैसला कर लिया और जबान ने बेसाख्ता इसका इजहार कर दिया। मेरे हाथ खुद बखुदा आसमान की तरफ उठ गए और मेरी जबान से या अल्लाह! का शब्द निकला और लगभग इसी कैफियत (मनोस्थिति) में दस मिनट तक मुझ पर और सारी मजलिस पर एक सकता तारी रहा (अचेतना की स्थिति छाई रही) हजारों की इस सभा में एक भी मुसलमान न था। उस समय मैं ने अपनी पुरानी इच्छा पूरी कर दी जो एक जमाने से मेरे सीने में दबी हुई थी।

प्रश्न : कबूले इस्लाम के बाद आप अपने अन्दर क्या तबदीली महसूस करती हैं ?

उत्तर : इस्लाम कुबूल करने से पहले मैं जिस तनहाई के अज़ाब में घिरी हुई थी उस से सदा के लिए छुटकारा मिल गया। पहले मेरा अपना कोई न था अब मेरे लिए अल्लाह है। इसलिए मैं अब बेइंतिहा खुश हूं। फज्र (सुबह की नमाज़) से पहले तीन बजे उठकर अल्लाह के दरबार में गिड़गिड़ाने से मुझे एक अजीब शान्ति मिलती है जो बीते हुए ६७ वर्षों में कभी प्राप्त न हुई। बीते चालीस साल से मैं खुद अपने आप की बन्दी थी। मगर अब मैं एक मालिक की बन्दी हूं जो ब्रहमाण्ड (कायनात) का पालनहार अल्लाह है। मैंने जिन्दगी में आजादी का मजा खूब चखा है अब मैं इस से तंग आ गई हूं। औरतों का विचार यह है कि उन्हें आजादी चाहिए। मैंने अपनी ६७ वर्ष के जीवन से जो सबक सीखा है, वह सारे संसार की औरतों के सामने बयाना कर रही हूं कि औरतों को आजादी नहीं चाहिए। यह आजादी उन्हें सैकड़ों लोगों का गुलाम बनाती है। औरतों को सुरक्षा चाहिए क्योंकि वह कमजोर हैं। मैं आज महफूज हूं औरतों को सुरक्षा देनेवाला धर्म केवल और केवल इस्लाम है। साथ ही साथ मैं अपने अन्दर होने वाली जिसमानी तबदीलीका जिक्र भी जरूरी समझती हूं। मैं एक बूढ़ी औरत

ही नहीं एक बीमार औरत भी हूं। शूगर की बीमारी ने मुझे कमजोर कर दिया है। तीन बार दिल का दौरा पड़ चुका है। मैं घर के अन्दर भी वहील चेयर के बिना घूम नहीं सकती थी। इस्लाम कुबूल करने के बाद मेरे शरीर में ताकत आग गई। हर जगह मैं खुद चलकर जाती हूं । वहील चेयर को मैं ने स्टोर रूप में डाल दिया है। इसके अतिरिक्त सारी दुन्या के मुसलमान भी मेरे करीब हुए हैं। वह महब्बत के साथ मुझ से मिलते हैं, मुझे पत्र लिखते हैं, मुझ से फोन पर बात करते और मुझे दावत दते हैं। अभी हाल में बम्बई गई थी जहां डॉ० ज़ाकिर नायक और मौलाना सलमान नदवी साहब से मुलाकात की। इस समय मैं क़तर से वापस आई हूं। बहुत से अरब देशों से मुझे दावत मिल रही है। मां के पवित्र उपाधि से लोग मेरा सम्मान करते हैं।

प्रश्न : आपके इस्लाम स्वीकार करने पर इस्लाम विरोधियों की क्या प्रतिक्रियाएं हैं ?

उत्तर : अनगिनत पत्र और फोन ऐसे आते रहे हैं जिस में हिन्दू कौम में वापसी के लिए सलाह ही नहीं बल्कि धमकियां भी दी गयी थीं। शिव सेना के लोगों ने समय और दिन निश्चित करके धमकी दी कि अगर दिये गये हुए समय से पहले इस्लाम नहीं छोड़ा तो हम हत्या कर देंगे। शहर की दीवारों पर मेरे खिलाफ पोस्टर लगा गये। उस समय मेरी एक सहेली पुलिस आईजी की बीवी ने मुझ से कहा कि पुलिस को सुरक्षा के लिए दर्खास्त दे दो, पुलिस तुम्हारी रक्षा करेगी। मैंने उसे उत्तर दिया कि मुझे पुलिस की जरूरत नहीं । मौत तक के लि मुझे सुरक्षा मिल चुकी है। यह सुरक्षा अल्लाह की तरफ से है। अल्लाह जब चाहे मैं मरने के लिए तैयार हूं। रही समस्या जालिमों के हमलों की तो यूं समझो कि मुझ को इससे एक बहुत बड़ी प्रधनता मिलेगी मैं शहीद कहलाऊंगी। यह इतना बड़ा सौभाग्य है कि अपनी पूरी बाकी जिन्दगी में पूरी कोशिश के बावजूदा ऐसा सौभाग्य प्राप्त नही कर सकती। मैंने अपनी सहेली को तसल्ली दी एक बार एक आदमी मेरे घर में दाखिल हुआ और मुझे कष्ट पहुंचाना चाहा। उस समय घर पर मेरा लड़का मौजूद था। उस ने उसे भगा दिया। एक और मौके पर एक भीड़ ने मेरे घर के द्वार पर पहुंच कर रात के समय शोर हंगामा मचाया। मैंने अपने फलैट का दरवाजा खोला और उन से कहा कि जिस को अपनी जान प्यारी हो वह वापस चला जाए। चुनानचि सभी खामोशी के साथ लौट गए।

प्रश्न : आप के बच्चों के विचार आप के बारे में क्या हैं?

उत्तर : मेरे लड़के मेरी खुशी और मेरी भलाई चाहते हैं मेरी जिन्दगी में आने वाली तबदीलियों को वह बहुत पहले से देख रहे थे। मेरे बड़े लड़के से प्रेस वालों ने इस सिलसिले में प्रश्न किया तो उसने उत्तर दिया "पिछले २६ वर्षों से मेरी मां के दिल की यह तड़प जिसे उन्हों ने अब ज़ाहिर किया है पर केवल मैं नहीं बल्कि मेरे सारे भाई खुश हैं। मां के कबूले इस्लाम की जरूरी कार्यवाही का प्रबन्ध मैं ने किया था।

प्रश्न : इस्लाम स्वीकार करने के बाद अपने पुराने मित्रों और साहित्यिक दुन्या से आप के संबंध कैसे हैं?

उत्तर : मैं हर एक को इस्लाम समझाने की कोशिशों में लगी हुई हूं मगर यह काम जबरदस्ती किसी चीज को थोपने के अन्दाज में नहीं बल्कि नर्मी और प्रेम के साथ समझाकर पूरा कर रही हूं। इसलिए सब से मेरा सम्बन्ध पहले की तरह कायम है। मेरे इस अन्दाज का डॉ० यूसुफुल करज़ावी ने पसन्द किया और प्रशंसा की।

प्रश्न : क़तर यूनिवर्सिटी के अतिरिक्त वहां के प्रमुख लोगों आदि के लिए विभिन्न समय और स्थानों में आठ सभाएं की गयीं। उनके अतिरिक्त केरल के लोगों के लिए भी बराबर दो प्रोग्राम रहे। चूंकि सुनने वाले अरब थे अतः मेरी अंग्रेजी तक़रीर का अरबी में अनुवाद किया गया। सारी सभाएं प्रतिष्ठित गंभीर और चुने हुए लोगों के लिए थीं। मैं ने इस से पहले संसार के बहुत से देशों के दौरे किये हैं। मुझे हमेशा अजनबीयत का एहसास होता था मगर कबूले इस्ला के बाद यह पहला विदेशी दौरा था जिस में मुझे यूं महसूस हुआ कि मैं अपने ही खानदान के लोगों में हूं। विचारों के आदान प्रदान के दौरान मैं ने अरबों के तअल्लुक से अपने विचारों को प्रकट किया तो उन्हों ने अल्हम्दुलिल्लाहि कह कर मेरी हिम्मत को बढ़ाया। डॉ० यूसुफ करज़ावी और शिक्षा व प्रशिक्षण मंत्री से अच्छे सम्बन्ध कायम हुए। हाल ही में होने वाली शिक्षाा इजलास (घोसटी) में शरीक होने की दावत भी दी। संसार के विभिन्न क्षेत्रों में रहने बसने वाले मुसलमानों ने

उपहारा भेज कर मुझे हैरान कर दिया।

प्रश्न : आइन्दा आप क्या करना चाहती हैं ?

उत्तर : इंशाअल्लहा अगले छः महीनों के अन्दर अल्लाह की पवित्र ज़ात के बारे में एक कावि संग्रह (अशआर का एक मजमूआ) प्रकाशित करूंगी। केरल के बूढ़ों के लिए रहने का एक बसेरा या सेन्टर बनाऊंगी। बाकी जिन्दगी में कुछ न कुछ करके अल्लाह से मुलाक़ात करूंगी। इस के लिए मैंने अपनी जमीन वक़्फ़ करने का फैसला किया है। आर.एस.एस. के लोगों ने मुझे इस जमीन में न आने की धमकी दी है। आप मेरे लिए दुआ करें।

प्रश्न : मुसलमानों से आप क्या कहना चाहती हैं?

उत्तर : मैं एक मुसलमान की ज़िन्दगी गुजारूं और मोमिन की मौत मरूं। इस सिलसिले में आप लोग मेरे हक़ में दुआ करें।

प्रश्न : हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिए आप का क्या पैग़ाम है?

उत्तर : सारे धर्म और फलसफों का जमाना गुजर चुका है। शुरू में वह अच्छे रहे होंगे परन्तु अब वह अव्यवहारिक (नाकाबिले अमल) हो चुके हैं केवल इस्लाम अव्यवहार्य न हो सका। देश के लोग भी इस के इच्छुक हैं मगर मुसलमानों की बेअमली (अव्यवहारिक जीवन) को देखकर वह ठिटक जाते हैं। हमें इस सूरतहाल को बदलना है। हमें देखकर उन्हें इस्लाम पसन्द आए ऐसे हालात पैदा करना हमारा असल काम है। मुसलमान बहुत भाग्यशाली और खुशनसीब है क्योंकि अल्लाह ने उसे मुसलमान बनाया है मगर अब हमें अपने आप को इस खुशनसीबी के योग्या साबित करना है, रसूलुल्लाह सल्ल० की पैरवी करनी है। जाहिली सभ्यताओं से अपने आपको बचाना है। एक सच्चे मुसलमान की जिन्दगी गुजारना और गैर मुस्लिमों तक इस्लाम का सन्देश पहुंचाना है।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आजमी

(पृष्ठ ३५ का शेष)

एन्टीरेबीज (**Anti-Rabies**)

के चौदह इंजेक्शना लगवाये जाएं। काटी हुई जगह परा कारबोलिक एसिड लगाएं। एन्टीरैबीज के इंजेक्शन सिर्फ सरकारी अस्पतालो में लगते हैं। लेकिन आज कल कुछ कम्पनियों नेभी एन्टीरैबीज इंजेक्शन तैयार किये हैं। जो सिर्फ तीन लगते हैं मगर कीमती होते हैं। किसी होश्यार डाक्टर से मश्वरा कर के वह इन्जेकशन भी लगवाए जा सकते है वह भी काम्याब हैं।

कुत्ता पागल न हो तो एन्टी रैबीज इन्जेक्शन लगवाने की जरूरत नहीं। ऐसी सूरत में काटने वाले कुत्ते को दस दिन देखना पड़ता है। इसलिए कि पागल कुत्ता दस दिन में मर जाता है। अगर कुत्ता दस दिनों में नहीं मरा तो पागल नहीं था।

पागल कुत्ता काटे तो झाड़ फूंक पर हरगिज इअतिमाद न करना चाहिए।

हाली के अशआर

वह बिजली का कड़का था या सौते हादी
अरब की जमी जिसने सारी हिला दी
नई इक लगन दिल में सबके लगा दी
इक आवाज में सोती बस्ती जगा दी
कि है ज़ाते वाहिद इबादत के लाइक
जबां और दिल की शहादत के लाइक
लगाओ तो लौ उससे अपनी लगाओ
झुकाओ तो सर उसके आगे झुकाओ

(पृष्ठ ३६ का शेष)

हजरात के लिए सही प्रशिक्षण का प्रबन्ध है, ताकि अपने महत्वपूर्ण कार्य में राब्ता हर प्रकार के अत्याचार से बचा रहे तथा हर कार्य में मध्यम प्रणाली अपनाए। यही दअवती केन्द्र कार्य के रूप–रेखा तैयार करते हैं।

● क्या इन्डोनेशिया में दअवती कार्य करने वालों को किसी रूकावट का सामना है?

एकबात ध्यान में रखना चाहिए कि वहां की ईसाई संगठनों को हर प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं, जिनके जरिये वह दुर्बल वर्ग के लोगों को अन्न, धन, वस्त्र, साफपीय जल और पूरी सुविधाओं के साथ चिकित्सा की सहायता प्रदान करने में सक्षम हैं। इसके विपरीत मुस्लिम देश उनके षडयन्त्रों से आंखें मोंदे हुए हैं। अतः मैं समझता हूं कि उस देश के वासियों और दाइयों को विरोधियों का सामना करने के लिए आर्थिक तौर पर भारी सहायता की आवश्यकता है।

● क्या इन्डोनेशिया में इस्लामी शिक्षा देने के लिए कोई संस्था है?

वहां की शिक्षा संस्थाओं की ईसाई संगठनों के साथ संघर्ष करने में और देश में इस्लामी परम्पराओं की देख–रेख में बड़ी भूमिका रही है। परन्तु उन संस्थाओं को राब्ता की ओरसे कोई सहायता नहीं मिली है, पर मेरी इस यात्रा से उनके संस्थापकों को उम्मीदें हो चली हैं।

● इस यात्रा के क्या परिणाम निकले ?

हम यह कह सकते हैं कि इस यात्रा के सकारात्मक परिणाम रहे। लोगों ने यह समझा कि हम उनके कितने निकट हैं, और हमने भी यह समझा कि वहां के मुसलमान किस प्रकार की कठिनाइयों से जूझ रहे हैं।

जिस्मानी अअ़ज़ा और उनकी बीमारियां

इदारा

नोट : इस उनवान के तहत हम जिस्मानी अअ़जा और उनकी बीमारियों का तआरुफ कराएंगे। कहीं कहीं कुछ पैटेंट दवाओं या जड़ी बूटियों से गैर मुजिर्र (हानि रहित) इलाज भी बताएंगे लेकिन डाक्टर से मशवरे पर जोर देंगे। इस विषय पर हम तिब की किताबों से मदद लेंगे इस लिए अक्सर (अधिकांश) उन के अलफाज की हिन्दी न लिख सकेंगे।

दिमाग

सर के बीच में एक नर्म भूरे रंग का लोथड़ा जो कि असबी (नसों की) खलयों का मुरक्कब है वह पूरे जिस्म के कामों को कन्ट्रोल करता है। दिमाग और नुखाअ (रीढ़ की हड्डी के अन्दर का गूंदा) से असबी रेशों का जाल निकल कर तमाम जिस्म में फैलता है। कुछ रेशे जिस्म के अअज़ा (अंगों) के हालात दिमाग तक पहुंचाते हैं, इन को हिस्सी अअसाब (ऐन्द्रिक नसें) कहते हैं और जो रेशे दिमाग के अहकामात (आदेशों) पर अमल कराते हैं उनको हरकी अअसाब (संचालक नसें) कहा जाता है। जिस्म के पूरे निजाम पर दिमाग कन्ट्रोल रखता है खासतौर से दिल की धड़कन, फेफड़े की धौंकन और उदर–पाचन (निजामे हज्म) पर।

दिमाग औरं नुखाअ का वजन १३५० से १४०० ग्राम तक होता है।

सर से मुतअल्लिक अम्राज :

सर दर्द (Headache)

सर का दर्द खुद कोई मरज नहीं, यह दूसरे मरजों के सबब होता है, और दो तरह का होता है आरिजी (अस्थायी) मुस्तकिल (स्थाई)

आरिजी दर्द बुखार, नजला, जुकाम, दिमाग की कमजोरी, सख्त गर्मी, हाजिमे की खराबी, कब्ज और कभी दिमागी उलझन से होता है।

मुस्तकिल सर का दर्द नजर की खराबी, गुर्दे की सूजन औरतो में अय्याम (ऋतु) की खराबी, गठिया, निकरस, मलेरिया, नाक के अन्दर सूजन वगैरह।

एक अच्छा डाक्टर दर्द के टैब्लट खिलाने के बजाए दर्द के सबब का इलाज करता है जिससे अस्ल मरज भी ठीक होता है और सर का दर्द भी।

आधी सीसी का दर्द (Migrain)

यह आधे सर का तेज दर्द सुब्ह से शुरू होता है और सूरज के साथ साथ बढ़ता है, कभी कभी इस के साथ मतली भी होती है। जियादा दिमागी काम, जिहनी परेशानियां, कब्ज, सख्त गर्मी या सर्दी में बाहर काम करना, औरतों में हैज की खराबी, ब्लेड प्रेशर, आंख की खराबी वगैरह इस मरज के अस्बाब हैं। उस्तुखूदूस ३ ग्राम, सूखी धन्या ३ ग्राम, काली मिर्च ७ अदद, कूट पीस कर सफूफ बना लें सुब्ह नहार मुंह ६ ग्राम पानी के साथ खाना मुफीद है। डाक्टर से सलाह जरूर लें।

बेख्वाबी (Insomia)

किसी मरज के सबब हो तो उस का इलाज कराएं यह बे खर्च नुस्खा अपनाएं सोने से पहले टहलें, गर्म मौसम हो तो नहाएं, बदन की मालिश कराएं, गर्म मीठा दूध पियें, पढ़े लिखे हों तो किसी मुश्किल किताब का मुतालआ करें।

जुनून (पागलपन) (Manib)

किसी अच्छे डाक्टर से इलाज कराएं सोते वक्त अत्रीफल अफतीमून हम्दर्द दहेली या अलीगढ़ की बनी हुई खिलाएं, इस का न तो डाक्टरी दवा से कोई टकराव होगा न कोई नुक्सान पहुंचेगा जब कि इसमें पागलपन को जड़ से खत्म करने की योग्यता है।

कभी पागलपन पागल कुत्ते के काटने से हो जाता है। उसकी पहचान यह है कि मरीज पानी से डरता है। इस पागलपन का कोई इलाज नहीं। यह मरीज अगर किसी को काट ले या इस की कोई गीली चीज किसी को लग जाए तो उसको भी यह मरज हो जाता है इसलिए बड़ी ही सावधानी चाहिए। मरीज को किसी से टच न होने दे। खाना पानी के बरतन अलग करके खुद्द को दूर रखते हुए खाना पानी दें। ऐसा मसीज दस दिन से जियादा जिन्दा नहीं रहता। अलबत्ता असर होने से पहले इलाज हो सकता है। जब पागल कुत्ता या सियारा या बन्दर या सुअर (यह सब कभी पागल हो जाते हैं) या पगलाया हुआ आदमी किसी को काट ले या उसकी कोई गीली चीज किसी तन्दुरूस्त आदमी को खाने पीने में आ जाए तो उसको

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

इन्डोनेशिया के मुसलमानों को ईसाइयत का सामना

आर्थिक सहायता की आवश्यकता

रिज़वानुल्लाह

इन्डोनेशिया १३६०० से अधिक द्वीपों वाला दक्षिण पूर्व ऐशिया का एक इस्लामी देश है। वह भूमध्य रेखा पर स्थित है, और पांच हजार किमी से अधिक क्षेत्र में फैला हुआ है। वहां दो ऐसे द्वीप हैं जिनकी गणना ग्रीन लैंड के बाद संसार के दूसरे और तीसरे बड़े द्वीपों में होती है।

इन्डोनेशिया अपनी जनसंख्या में दुन्या का पांचवा देश है। इस देश के ६ हजार द्वीपों पर मनुष्य जाति आबाद हैं। इनमें से ६० प्रतिशत जावा द्वीप में, जो पूरी जनसंख्या की कुल ७ प्रतिशत है। इसी में देश की राजधानी जकारता स्थित है। इस देश की ६१ प्रतिशत जनता मुस्लिम है। बाकी लोग हिन्दू बौद्ध और ईसाई धर्मों से संबंधित है।

इन्डोनेशिया में अरबद्वीप तथा भारत वर्ष से जाने वाले मुस्लिम व्यापारों द्वारा इस्लाम पहुंचा और धीरे–धीरे पूरे क्षेत्र में फैला तेरहवीं शताब्दी के अन्त में जब सोमात्रा के एक स्थानीय शासक ने इस्लाम ग्रहण किया तो फिर उसने बासा की अगवाई करने वाले मलिक सालेह को इस्लाम की ओर आमंत्रित किया, फिर उसकी जनता भी मुसलमान हो गई। कुछ ऐसे चिन्ह मिले हैं जिस से पता चलता है कि सालेह का निधन १२६७ ई०में हुआ। और प्रसिद्ध पर्यटक 'इब्ने बतूता ने १३४५ ई० में वहां की यात्रा की थी। उन्होंने वहां के शासक के सबंध में लिखा है कि वह सभ्य, शरीफ़ तथा धार्मिक था, शुक्रवार (जुमा) को मस्जिद भी जाता था। उसने अपने बहुत से प्रतिनिधियों को 'बासा' की ओर वहां की जनता को इस्लाम सिखाने के उद्देश्य से भेजे।

अन्तर्राष्ट्रीय इस्लामी संगठन (राब्ता आलमे इस्लामी) का एकदल एण्डोनेशिया में दअ़वते इस्लामी की कोशिशों और आवश्यकताओं को जानने के लिए रवाना हुआ। इस समय हम श्री अहमद कुतुबी से एक भेंटवार्ता प्रस्तुत कर रहे हैं, जो राबता में शिक्षा और दअवत के विभागीय अध्यक्ष हैं, और इण्डोनेशिया की यात्रा से लौटे हैं।

● क्यों आपनेअपनी शुरूआती यात्रा के लिए इण्डोनेशिया को चुना?

● इसके कई कारण हैं, पर सबसे महत्वपूर्ण कारण वहां राब्ता की ओर से १४५ प्रतिनिधियों की उपस्थिति है जो ईसाई संगठनों द्वारा मुसलमानों को ईसाई बनाने और धर्म परिवर्तन के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं, हमारा उद्देश्य उन की समस्याएं जानना है।

● इन्डोनेशिया में ईसाई संगठनों के सक्रिय होने के क्या कारण हैं।

जी हां! वहां ईसाई संगठनें सक्रिय हैं। शिक्षा की कमी, गरीबी और आर्थिक दुर्बलता इसके कारण हैं। इसके अतिरिक्त हर प्रकार की संस्कृतियों को सरकार द्वारा खुली छूट देना भी इसके कारणों में हैं।

● इन्डोनेशिया में दअवती सक्रियता के सम्बन्ध में आपकी क्या आशाएं हैं?

● सच्ची बात तो यह है कि वहां विभिन्न प्रकार की इस्लाम विरोधी ताकतों के बावजूद दअवती सक्रियता उज्जवल नजर आती है। हमारे दाई जान तोड़ कोशिश कर रहे हैं। इस्लाम विरोधी तत्व चाहे कुछ भी कर लें परमप्रमेश्वर अपने दीन को गालिब करेगे।

● क्या आपने इण्डोनेशिया के समूचे बड़े द्वीपों को देख लिया है?

● यह बड़ा कठिन कार्य है, अगर हम सम्पूर्ण द्वीपों तक पहुंचना चाहें तो इसकार्य के लिए लम्बे समय की दरकार होती। क्योंकि उस देश की द्वीपें बहुत दूर–दूर स्थित हैं अतः मैंने केवल ८ द्वीपों ही तक जा पाया।

● क्या वहां के दाई अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं, या शिक्षा व दअवत विभाग की ओरसे कोई रूपरेखा बनाई गई है?

● सर्वप्रथम इस बात का ज्ञात होना चाहिए कि राब्ता की स्थापना महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए हुई है। दअवती कार्य के लिए इण्डोनेशिया भर में बहुत सी मसाजिद और महाविद्यालयों का निर्माण किया गया है, उनमें दाअ़ी

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

वैदिक काल की सभ्यता

इतिहास के पन्नों से

इदारा

वर्ण व्यवस्था का अर्थ - वर्ण का शाब्दिक अर्थ रंग होता है। वर्ण शब्द का प्रयोग वेश तथा वर्ग के अर्थ में भी होता है। यह सामाजिक प्रतिष्ठा तथा स्थिति का भी द्योतक होता है। हिन्दू समाज–शास्त्र के अनुसार वर्ण शब्द का अर्थ एक प्रकार का सामाजिक संगठन होता है। प्राचीन भारतीय आर्यों ने अपने समाज को सुचारू रीति से संचालित करने के लिए एक विशेष प्रकार की व्यवस्था की थी जो वर्ण व्यवस्था के नाम से प्रसिद्ध है। यही वर्ण–व्यवस्था कालान्तर में जाति प्रथा में बदल गई और हिन्दू समाज का मूलाधार बन गई और आज तक उसे प्रभावित करती चली आ रही है। अब इस वर्ण व्यवस्था के विभिन्न स्वरूपों पर प्रकाश डाल देना आवश्यक है।

वर्ण–व्यवस्था की उपयोगिता– सबसे पहले इस बात पर विचार कर लेना आवश्यक है कि वर्ण व्यवस्था के संगठन का आधार क्या था। इस व्यवस्था के चार प्रधान आधर बतलाये गये हैं अर्थात् रंग, वस्त्र, व्यवसाय तथा धर्म। अब इनकी अलग–अलग व्याख्या की जायेगी।

(१) रंग का आधार – वर्ण का अर्थ रंग होता है। अतएव प्रो० रैप्सनका कहना है कि वर्ण व्यवस्था का जन्म रंग–भेद के कारण हुआ। आर्य लोग गौर वर्ण के थे और अनार्य लोग कृष्ण–वर्ण के। अतएव रंग के आधार पर दो जातियां बन गयीं अर्थात् आर्य तथा अनार्य। इस प्रकार भारतीय समाज दो वर्गों में विभक्त हो गया जिनकी स्थिति तथा प्रतिष्ठा में अन्तर था। आर्यों की स्थिति विजेता की थी और अनार्यों की विजित की। इसी से अनार्य लोग दस्यु अथवा दास कहलाते थे। आर्य अपने को श्रेष्ठ समझते थे और अनार्यों को नीच समझते थे और उन्हें घृणा की दृष्टि से देखते थे।

(२) वस्त्र अथवा वेश भूषा का आधार – वर्ण का अर्थ वस्त्र अथवा वेश–भूषा भी होता है। अतएव कुछ विद्वानों की धारणा है कि सम्भवतः भिन्न–भिन्न रंग के वस्त्रों को धारण करने के कारण भारतीय समाज कई वर्णों में विभक्त हो गया। इन वर्णों के वस्त्रों के रंग निश्चित थे। ब्राहमणों का वस्त्र श्वेत–वर्ण का, क्षत्रियों का हरित वर्ण का, वैश्यों का पीत–वर्ण का और शूद्रों का कृष्ण–वर्ण का होता था।

(३) व्यवसाय का आधार – वर्ण–व्यवस्था का मूलाधार व्यवसाय माना गया है। इस प्रकार वर्ण का तात्पर्य व्यवसायानुसार चार वर्गों से है अर्थात् ब्राहमण जो विद्यालय तथा पूजा–पाठ का कार्य करते थे, क्षत्रिय जो युद्ध तथा शासन का कार्य करते थे, वैश्य जो व्यवसाय तथा कृषि का कार्य करते थे और शूद्र जो अन्य उच्च जातियों की सेवा किया करते थे। इस प्रकार विसेन्ट स्मिथ् के विचार में वर्ण से वर्ण अथवा कोटि का बोध होता है। यह वर्ण न केवल व्यवसाय वरन् स्थिति तथा प्रतिष्ठा का भी सूचक होता था। ब्राहमण सर्वश्रेष्ठ माने जाते थे। ब्राहमणों के बाद क्षत्रियों का और क्षत्रियों के बाद वैश्यों का स्थान आता था। शूद्र सबसे निम्नकोटि के समझे जाते थे।

(४) धर्म का आधार – ऋग्वेद के पुरूष सूक्त में लिखा है, "पुरूष के मुख से ब्राहमण की भुजाओं से राजन्य की, जंघा से वैश्य की और चरण से शूद्र की उत्पत्ति हुई।" यदि हम इसे एक प्रकार रूपक मान लें तो कुछ अनुचित न होगा। इस सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक शरीर माना गया है। ब्राहमण इस समाज रूपी–शरीर का मुख था और उसका कार्य पठन–पाठन तथा यजन–याजन था। यह कार्य बौद्धिक तथा आध्यात्मिक था। अतएव ब्राहमण को समाज में सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया जो शरीर में मुख का होता है। राजन्य उस समाज रूपी शरीर की बाहु या भुजा था और समाज की रक्षा करना इसका कर्तव्य था। इसे समाज में द्वितीय तथा ब्राहमणों से नीचे स्थान दिया गया जो शरीर में भुजाओं का होता है। वैश्य समाज रूपी शरीर की जंघा था जिसकी सबलता पर समाज पर भरण–पोषण निर्भर था। इसे समाज में तृतीय स्थान दिया गया जो शरीर में जंघ का होता है। शूद्र उस समाज का चरण था जिसे इस विशाल समाज–रूपी शरीर का बोझ ढोना पड़ता था। शूद्र को समाज में

सबसे नीचे स्थान प्रदान किया गया जो चरणों का शरीर में होता है। परन्तु शूद्र का समाज में कम महत्व नहीं है। बिना उसके समाज लंगड़ा होता है और उसका सुचारू रीति से संचालन नहीं हो सकता था। वह भगवान् के पवित्र चरणों से निकला है, अतएव वह स्वयं भी पवित्र भी है। इस दृष्टिकोण से देखने पर वर्ण व्यवस्था का मूलाधार उपयोगिता तथा सामंजस्य था।

वर्ण व्यवस्था की उपयोगिता – ऊपर से विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्ण–व्यवस्था का आधार कर्म अथवा व्यवसाय था, जन्म नहीं। समाज के कार्य को सुचारू रीति से संचालित करने के लिए ही वर्ण–व्यवस्था का निर्माण किया गया था सब एक दूसरे के साथ खान–पान करते थे और वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करते थे और आदमी अपने व्यवसाय को बदल भी सकता था। इस व्यवसाय में हिन्दू समाज का बड़ा कल्याण हुआ उसकी उपयोगिता निम्नांकित थी :–

(१) अधिकारों तथा कर्तव्यों का समन्वय – वर्ण व्यवस्था ने समाज के सभी व्यक्तियों को एक दूसरे के साथ अधिकार तथा कर्तव्य के सूत्र में बांध दिया था। जो एक का अधिकार था वही दूसरे का कर्तव्य था और बिना अपने कर्तव्यों का पालन किये कोई अपने अधिकारों का उपयोग नहीं कर सकता था। उदाहरण के लिए यदि ब्राह्मण बौद्धिक तथा अध्यात्मिक विकास का कार्य न करता तो उसकी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति न होती अर्थात् न तो क्षत्रिय उसकी रक्षा करता और न वैश्य उसके भरण–पोषण का कार्य करता। इस प्रकारा सभी अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश थे।

(२) योग्यतानुसार कार्यों का चयन – वर्ण व्यवस्था से एक बहुत बड़ा लाभ यह था कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी प्रतिभा, योग्यता तथा मनोवृत्ति के अनुसार अपना कार्य–क्षेत्र चुन लेता था उसी में उसे अपनी अधिक से अधिक उन्नति का अवसर प्राप्त हो जाता था।

(३) कार्य कुशलताा में वृद्धि – वर्ण व्यवस्था से कार्य कुशलता में वृद्धि होती थी। एक वर्ण वाले एक ही व्यवसाय करते थे जिससे वे उसमें बड़ी निपुर्णता प्राप्त कर लेते थे। वास्तव में वर्ण व्यवसाय कार्य–विभाजन के सिद्धान्त पर आधारित थी। यह विभाजन था धार्मिक राजनीतिक तथा आर्थिक। धार्मिक कार्यों में ब्राह्मण अत्यन्त प्रवीण होता था इसी प्रकार राजनीति में क्षत्रिय और अर्थ सम्बन्धी कार्यों में वैश्य। सभी अपने–अपने क्षेत्र के पण्डित होते थे।

(४) संघर्ष का अभाव – वर्ण व्यवस्था के स्थापित हो जाने से समाज संघर्ष की बहुत कम संभावना रहती थी। सभी के कार्य निश्चित थे और सभी अपने निश्चित क्षेत्र में शान्ति पूर्वक कार्य करते थे। न कोई प्रतिद्वंद्विता थी और न कोई होड़, वरन् प्रत्येक व्यक्ति अपनी शक्ति के अनुसार व्यवसाय करता हुआ समाज–कल्याण में कार्य में लगा रहता था।

(५) स्वार्थ तथा परार्थ का समन्वय– इस व्यवस्था में स्वार्थ अर्थात् अपने हित और परार्थ अर्थात् लोक–हित का सुन्दर समन्वय था। इसमें अपनी भलाई के साथ–साथ समाज की भी भलाई होती थी। व्यक्ति समाज की एक, इकाई के रूप में कार्य करता था उसके कार्यों का प्रभाव न केवल अपने जीवन पर वरन् पूरे समाज पर पड़ता था। ब्राह्मण न केवल अपने अध्यात्मिक कल्याण के लिए वरन् पूरे समाज की रक्षा के लिए यज्ञ करता था। क्षत्रिय न केवल अपनी रक्षा के लिए वरन् पूरे समाज की रक्षा के लिए युद्ध करता था। इसी प्रकार वैश्य न केवल अपने वरन् पूरे समाज के भरण–पोषण के लिए कार्य करता था। प्रत्येक व्यक्ति के कार्य में समाज का कल्याण प्रधान और अपना कल्याण गौण रहता था। अतएव पूर्ण–व्यवस्था एकता की द्योतक है न कि भारतीय समाज की विच्छिन्नता की।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक परम्परा की रक्षा – वर्ण – व्यवस्था ने हमारी समाजिक तथा सांस्कृतिक परम्पराओं की रक्षा की है। वर्ण–व्यवस्था ने हमारे समाज को एक निश्चित स्वरूप दिया और उस स्वरूप द्वारा हमारी सभ्यता तथा संस्कृति का सृजन किया। चूंकि वर्ण–व्यवस्था का यह ढांचा जो वैदिक काल में बनाया गया था स्थायी बन गया था और आज तक चला आ रहा है अतएव उस व्यवस्था द्वारा रचित सभ्यता तथा संस्कृति भी सुरक्षित बनी चली आ रही है।

जाति–प्रथा का प्रादुर्भाव –कालांतर में वर्ण–व्यवस्था जाति–प्रथा में परिवर्तित हो गई। वर्ण का निश्चय व्यवसाय से होता था परन्तु जाति का निश्चय जन्म से होने लगा। एक वर्ण के लोग एक ही व्यवसाय करते थे परन्तु एक ही जाति के लोग विभिन्न व्यवसायों को कर सकते हैं। वर्ण व्यवस्था में सहभोग तथा अंतर्जातीय विवाह पंर कोई प्रतिबन्ध न था और

छुआ छूत की भावना न थी परन्तु जाति–प्रथा में सहभोज तथा अन्तर्जातीय विवाहों पर प्रतिबन्ध लग गया। जाति प्रथा में रक्त की शुद्धता पर ध्यान दिया जाने लगा और अपनी ही जाति में विवाह करना उचित समझा जाने लगा। जाति प्रथा में छुआ–छूत की भावना उत्तरोत्तर बढ़ने लगी और अस्पृश्यता का प्रकोप बढ़ने लगा। कालांतर में प्रत्येक जाति में एक पेशे को अपना लिया जो उसका वंशानुगत पेशा बन गया। प्रत्येक जाति ने अपना आदर्श, अपने आचरण के नियम तथा अपने रीति–रिवाज बना लिए जिसके अनुसार उस जाति के लोग अपना जीवन व्यतीत करने लगे। धीरे–धीरे जाति–प्रथा के बन्धन कड़े होते गये और इनमें संकीर्णता आती गई। कालांतर में प्रत्येक जाति में अनेक उपजातियां उत्पन्न हो गई और भारतीय समाज जो प्राचीन काल में अत्यन्त संगठित था छिन्न भिन्न हो गया।

जाति–प्रथा से लाभ – जिस प्रथा का ऊपर वर्णन किया गया है उसके निम्नलिखित लाभ हैं।

(१) सामाजिक स्थिति का निश्चय – जिस जाति में जिस व्यक्ति का जन्म हो जाता है उससे उसकी सामाजिक स्थिति का तुरंत निश्चय हो जाता है। उदाहरणा के लिए जब किसी व्यक्ति का जन्म ब्राह्मणा या शूद्र के वंश में हो गया तब जीवन भर के लिए यह ब्राह्मण या शूद्र बन गया। यदि उसका जन्म ब्राह्मण कुल में हुआ तो वह जीवन भर के लिए पवित्र तथा ऊंचा हो गया और यदि उसका जन्म शूद्र वंश में हो गया तो वह जीवन भर के लिए अपवित्र तथा नीच बन गया। उसके कर्मों अथवा उसकी संपन्नता या विपन्नता का उसकी सामाजिक स्थिति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(२) मानसिक शान्ति – जाति–प्रथा जन्म से ही प्रत्येक व्यक्ति के स्थान तथा कार्या को निश्चित करके उसे मानसिक शान्ति प्रदान करती है। जन्म लेते ही मनुष्य की स्थिति तथा उसके कार्य–क्षेत्र का निश्चय हो जाता है। इससे अपने जीवन के मार्ग को निश्चित करने में उसे कोई मानसिक कष्ट अथवा उलझन नहीं होती और उसका मन बिलकुल शांत रहता है।

(३) व्यवसाय का निश्चय – जाति–प्रथा के कारण मनुष्य को जीवन के प्रारंभ से ही अपने व्यवसाय का पता लग जाता है क्योंकि प्रत्येक जाति का व्यवसाय प्रायः निश्चित रहता है। वह अपनी जाति के पेशे के पर्यावरण में रहता है और उस पेशे की सामान्य जानकारी प्राप्त कर लेता है। लोहार, बढ़ई, कुम्हार, सोनार आदि के बच्चे बचपन से ही अपनी जाति के पेशे को थोड़ा बहुत सीख लेते हैं और अपनी जाति के परम्परागत पेशे में कुशलता प्राप्त कर लेते हैं।

(४) जीवन साथी के चुनाव में सुविधा–जाति प्रथा इस बात पर निश्चित कर देती है कि किस समूह में किस व्यक्ति के साथ विवाह सम्भव है और उस समूह में किस व्यक्ति के साथ असम्भव है और किन–किन प्रतिबन्धों का पालन करना है। इससे अपने जीवन–साथी के चुनने में बड़ी सुविधा हो जाती है।

(५) सामाजिक सुरक्षा – जाति–प्रथा अपने सदस्यों के लिए सुरक्षा प्रदान करती है। यदि जाति के सदस्यों पर कोई आपत्ति आ जाती है तो जाति अपने संगठन तथा अपनी पंचायत द्वारा उसकी सहायता करती है। अपनी जाति वालों के साथ लोगों की बड़ी सहानुभूति रहती है और वे एक–दूसरे की सहायता करने के लिए उद्यत रहते हैं।

(६) व्यवहारों का नियन्त्रण : प्रत्येक जाति के अपने नियम तथा प्रतिबन्ध होते हैं और इनके द्वारा प्रत्येक जाति अपने सदस्यों के कार्यों तथा व्यवहारों पर नियंत्रण रखती है। यदि कोई व्यक्ति अवांछनीय कार्य करता है तो वह बिरादरी के बाहर निकाल दिया जाता है।

(७) धार्मिक भावनाओं की रक्षा – जाति का अपने सदस्यों के धार्मिक जीवन पर भी बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक जाति की अलग–अलग धार्मिक विधियां होती हैं और प्रायः उसके अलग–अलग देवी देवता भी होते हैं। उन विधियों के अनुसार ही उस जाति के लोगों को आचरण करना पड़ता है और उन देवी–देवताओं में उनका प्रबल विश्वास हो जाता है।

(८) रक्त की शुद्धता – जाति प्रथा से रक्त की शुद्धता को बनाये रखने में बड़ी सहायता मिलती है। चूंकि प्रत्येक जाति के लोग अपनी ही बिरादरी में शादी करने के लिए विवश रहते हैं क्योंकि गैर–बिरादरी में शादी करने पर वे जाति के बाहर कर दिये जायेंगे, अतएव रक्त की शुद्धता बनी रहती है और रक्त का मिश्रण नहीं होता।

(९) संस्कृति की रक्षा – प्रत्येक जाति की अपनी संस्कृति होती है। उसके अपने रीति–रिवाज, आचार–व्यवहार तथा खान–पान होते हैं। यह संस्कृति आगामी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है और उसकी निरन्तरता बनी रहती है और यह सुरक्षित रहती है। (जारी)

नोट : जाति विभाजन का विषय पूरा होने पर सम्पादकीय समीक्षा लिखी जाएगी।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

डॉ० मुईद अशरफ नदवी

सऊदी महिलाओं को वोटिंग में भाग लेने की अनुमति :

मुस्लिम शहनशाहियत की शासन व्यवस्था में सऊदी अरब में पहली बार औरतों को व्यापारिक प्रतिनिधि (नुमाइन्दा) बनाने और प्रतिनिधि चुनने के लिए वोटिंग में भाग लेने की अनुमति दी गई है। जद्दा के ट्रेड एण्ड इन्डस्ट्री चैम्बर के मुख्या गस्सान अल सुलैमान ने कहा कि सऊदी हुकूमत ने जद्दा की महिला व्यापारियों को बोर्ड के १८ सदस्यों के चुनाव में भाग लेने की अनुमति दे दी। उन्होंने कहा कि सरकार ने महिलाओं को पहली बारा इस वर्ष चैम्बर के प्रतिनिधियों के चुनाव में शामिल होने और वोटिंग में भाग लेने का अधिकार दिया है मिस्टर सुलैमान ने पत्रकारों को बताया कि सऊदी अरब के महत्वपूर्ण व्यापारिक नगर जद्दा में अगरचः चैम्बर के ४० हजार सदस्यों में से केवल १० प्रतिशत महिला सदस्य हैं लेकिन व्यापारिक प्रतिनिधि के चुनाव में उन्हें शामिल किए जाने की अनुमत दिये जाने से वह बहुत प्रसन्न हैं।

मिस्टर सुलैमान ने कहा कि सब सीटों पर महिला प्रतिनिधि चुनाव लड़ती है तो उन्हें उस पर कोई आपत्ति नहीं होगी। सऊदी अरब में राष्ट्रीय स्तर पर बलाबात के चुनाव हुए ज़िस में महिलाओं को शिरकत की अनुमति न थीं। फिर भी अधिकारियों ने कहा कि अगले चार वर्षों में होनेवाले चुनाव में उन्हें खड़ा होने और वोट डालने की इजाजत दी जाएगी। जद्दा की एक महिला व्यापारी नशा ताहिर ने हुकूमत के इस फैसले पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि सऊदी अरब में औरतों के हक में यह एक महत्वपूर्ण कदम हैं।

पाक पर भी हमले के मूड में थे बुश

अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज डब्ल्यू बुश ने इराक पर हमला करने से दो माह पूर्व ही ब्रिटिश प्रधानमंत्री टोनी ब्लेयर से कहा था कि वह व्यापक जनसंहार वाले हथियारों का प्रसार रोकने के लिये आगे बढ़ना चाहते थे। समस्या पैदा करने वाले देश के तौर पर बुश ने पाकिस्तान का नाम लिया था। न्यूयार्क टाइम्स के अनुसार बुश ने यह टिप्पणी ३० जनवरी २००३ को टोनी ब्लेयर के साथ हुई बातचीत में की थी और इसे ब्लेयर के तत्कालीन निजी सचिव मैथ्यू रायक्राफ्ट ने नोट किया था जिसे हाल में प्रकाशित पुस्तक में छापा गयाहै।

दो पृष्ठ के दस्तावेज में इस टिप्पणी को केवल एक वाक्य में समेटा गया है जिसमें कहा गया है कि बुश व्यापक जनसंहार वाले हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए इराक से एक कदम और आगे बढ़ना चाहते थे। उन्होंने इस बारे में विशेष तौर पर सऊदी अरब, ईरान, उत्तरी कोरिया और पाकिस्तान का जिक्र किया था। इस नोट में इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता कि व्यापक जनसंहार वाले कथित हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए उन्होंने अपनी सूची में सऊदी अरब और पाकिस्तान के नाम क्यों शामिल किये।

लालैस वर्ल्ड के अमेरिकी संस्करण में छपी बुश की यह टिप्पणी खासी महत्वपूर्ण साबित हो सकती है क्योंकि इसमें पाकिस्तान और सऊदी अरब को उस सूची में शामिल कर दिया गया है जिसमें सार्वजनिक तौर पर केवल ईरान, इराक और उत्तरी कोरिया का नाम ही शामिल था। इन तीन देशों को बुश ने बुराई की धुरी करार दिया था।

डिन्मार्क का बाईकाट

डिन्मार्क के कारोबारी माहिरीन का कहना है कि अगर यह बाईकाट छे माह तक जारी रहता है तो डिन्मार्क को ३७ अरब यूरो का नुकसान होगा। (अल अहरार)

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890